INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp Link- https://wa.link/uwc5lp

Online Order Link- https://bit.ly/3X6MGue

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

राजस्थान का इतिहास

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत • अभिलेख ○ शिलालेख, प्रशस्ति, स्तम्भ लेख • सिक्के • साहित्यिक स्रोत • ताम्रपत्र • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	1
2.	प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं) • पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक • प्रागैतिहासिक स्थल की विशेषताएं • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	19
3.	ऐतिहासिक राजस्थान • महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र • प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	29
4.	प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां • प्रमुख राजवंश ○ गुहिल वंश ○ प्रतिहार वंश ○ चौहान वंश ○ परमार वंश ○ राठौड़ वंश ○ सिसोदिया वंश	35

	○ कछवाहा वंश • प्रमुख घटनाएँ • प्रमुख युद्ध, उनके कारण एवं परिणाम • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	
5.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था • राजस्थान में मराठा शक्ति का विस्तार • प्रमुख युद्ध एवं उनके परिणाम • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	91
6.	आधुनिक राजस्थान (19 वीं – 20 वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ) • राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियाँ • राजस्थान में 1857 का विद्रोह • विभिन सामाजिक कुरीतियाँ • सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दे • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	107
7.	राजस्थान में राजनीतिक जागरण • राजनीतिक जागरण के लिए उत्तरदायी कारक • समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	123
8.	20 वीं शताब्दी में राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	128
9.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	137
10.	राजस्थान का एकीकरण • एकीकरण के समय प्रमुख घटनाएँ एवं उनके कारण • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	149

राजस्थान की कला एवं संस्कृति (धरोहर)

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	राजस्थान की वास्तु परम्परा • प्रमुख मंदिर एवं मंदिर निर्माण की शैलियाँ • महत्त्वपूर्ण किले एवं उनकी विशेषताएं • महत्त्वपूर्ण महल एवं उनकी विशेषताएं • मानव निर्मित जलीय संरचना • राजस्थान में विश्व विरासत के प्रमुख स्थल • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	154
2.	चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, उपशैलियाँ और हस्तशिल्प • मेवाड़, उदयपुर, नाथद्वार, देवगढ़, चावण्ड, मारवाड़, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, बूंदी, हाड़ौती इत्यादि • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	192
3.	प्रदर्शन कला एवं ललित कला तथा उनकी विशेषताएं • शास्त्रीय संगीत • शास्त्रीय नृत्य • लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र • लोक नृत्य एवं नाट्य • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	215
4.	भाषा एवं साहित्य • महत्त्वपूर्ण कृतियाँ एवं बोलियां, लोक साहित्य • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	248

5.	धार्मिक जीवन • धार्मिक समुदाय • राजस्थान में संत एवं संप्रदाय • राजस्थान के लोक देवी - देवता • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	262
6.	राजस्थान में सामाजिक जीवन • प्रमुख मेले एवं उनकी विशेषताएं • प्रमुख त्यौंहार एवं उनकी विशेषताएं • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	284
7.	सामाजिक रीति रिवाज एवं परम्पराएँ • विशेषताएं एवं उनका महत्त्व • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	296
8.	वेशभूषा एवं आभूषण • विशेषताएं एवं उनका महत्त्व • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	302
9.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न	305

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान इतिहास के स्रोत

परिचय –

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।

इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

> हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका थी।

इतिहास का अध्ययन : –

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है –

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल –

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं । इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिद्न" लिपि के नाम से भी जानते हैं । इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है । जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है। प्राचीन इतिहास के स्रोत–पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :–

- इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।
- भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं ।
- महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिंता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1822 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है ।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :–

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी (कोटपूतली-बहरोड़) से मिले है।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के

अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-
- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख **केकड़ी जिले** की भिनाय तहसील के **बड़ली गाँव** के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-
- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।
- शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है।

मानमोरी का अभिलेख :-
- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्प** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में '**अमृत मंथन**' का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डौर अभिलेख :-
- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.):-
- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-
- यह बड़वा (अंता तहसील, बारां जिला) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है।

कणसवा का अभिलेख :-
- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-
- 944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-
- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चोचिंगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-
- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में '**बापा**' से '**महाराणा समरसिंह**' तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराडू का लेख :-
- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

सांडेराव का लेख :-
- 1164 ई. का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।
- यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख में उस समय के विभिन्न करों व भूमि की नाप के बारे में जानकारी मिलती है।

शृंगी ऋषि का लेख :-
- 1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास शृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार '**कविराज वाणीविलास योगेश्वर**' थे एवं उत्कीर्णकर्ता हदा के पुत्र पन्ना थे।

- यह महाराणा मोकल के समय का है जिसमें राणा हम्मीर से मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस लेख में महाराणा मोकल द्वारा एकलिंगजी मंदिर के चारों ओर दीवार बनवाने तथा नागौर शासक फिरोज खाँ एवं गुजरात शासक अहमद खाँ को युद्ध में परास्त करने का उल्लेख है।
- इस लेख में राणा लाखा द्वारा काशी, प्रयाग व गया (त्रिस्थली) की यात्रा करने का उल्लेख भी मिलता है।

आमेर का लेख :-

- 1612 ई. में संस्कृत तथा नागरी भाषाओं में उत्कीर्ण इस लेख से कच्छवाहा शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस लेख में कच्छवाहा वंश को **'रघुवंश तिलक'** कहा गया है।
- इस लेख में निजाम शब्द को प्रांतीय विभाग के रूप में उल्लेखित किया गया है।
- इसमें मानसिंह को भगवन्तदास का पुत्र बताया गया है।

बरबथ का लेख :-

- 1613-14 ई. के इस लेख में मुग़ल शासक अकबर की पत्नी मरियम-उज-ज़मानी द्वारा निर्मित बरबथ बाग एवं बयाना बावड़ी का उल्लेख मिलता है। **यह मुग़ल राजपूत वैवाहिक संबंध का बोध कराता है।**

सांभर का लेख (1634 ई.):-

- यह लेख एक सराय के दरवाजे पर हिन्दी भाषा में उत्कीर्ण है।
- इसमें अकबर द्वारा इस सराय के निर्माण करने तथा शाहजहाँ द्वारा 1634 ई. में इसका जीर्णोद्धार करने का उल्लेख है। इसकी भाषा हिन्दी है।

किणसरिया लेख (999 ई.):-

- संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण यह लेख **डीडवाना-कुचामन** के किणसरिया गाँव में अंकित है।
- इस लेख में चौहान वंश के शासक वाक् पतिराज, सिंहराज तथा दुर्लभराज की विजयों व उपलब्धियों का वर्णन है।
- दूसरे भाग में दधीचि वंश के चच्च द्वारा मंदिर बनाने का उल्लेख है।

भ्रमरमाता का लेख :-

- प्रतापगढ़ जिले के छोटी सादड़ी के भ्रमर माता मंदिर से प्राप्त 490 ई. का शिलालेख 5वीं सदी की राजनीतिक स्थिति एवं प्रारंभिक कालीन सामन्त प्रथा के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है।
- इस शिलालेख में गौर वंश एवं औलिकार वंश के शासकों का उल्लेख मिलता है।
- इस लेख का उत्कीर्णक ब्रह्मसोम था।

पाणाहेड़ा का लेख (1059 ई.) :-

- बाँसवाड़ा के पाणाहेड़ा गाँव से प्राप्त लेख।
- इस लेख में वागड़ एवं मालवा के परमार वंश के राजाओं (मुंज, सिंधुराज एवं भोज) की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।

नांदसा यूप स्तम्भ लेख (225 ई.):-

- भीलवाड़ा जिले के नांदसा गाँव से प्राप्त स्तम्भ लेख।
- यह स्तम्भ लेख 'सोम' द्वारा स्थापित है।
- इस स्तम्भ लेख से उत्तरी भारत में प्रचलित पौराणिक यज्ञों के बारे में जानकारी मिलती है।

बर्नाला यूप स्तम्भ लेख (227 ई.):-

- यह स्तम्भ लेख जयपुर रियासत के बरनाला ग्राम में स्थित था।
- बर्नाला (जयपुर) से प्राप्त।
- वर्तमान में आमेर संग्रहालय में सुरक्षित।

बिचपुरिया यूप स्तम्भ लेख (274 ई.):-

- यह जयपुर जिले के उणियारा ठिकाने से प्राप्त।
- वर्तमान में यह टोंक जिले में है।

तलेटी मस्जिद का लेख (1420 ई.):-

- बयाना (भरतपुर) से प्राप्त।
- इस मस्जिद का निर्माण मलिक मौज्जम ने करवाया था।
- यह 'औढ़ खाँ के समय का अभिलेख है।

गुढ़ड़ी बाजार की मस्जिद का लेख (1741 ई.) :-

- डीडवाना (डीडवाना-कुचामन) से प्राप्त लेख।

रसिया की छतरी का लेख (1274 ई.):-

- चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इस लेख में 13वीं सदी के मेवाड़ की प्रारम्भिक स्थिति के बारे में तथा दास प्रथा व अस्पृश्यता की स्थिति की जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक **प्रियपट्ट तथा सूत्रधार** सज्जन था।

घटियाला के शिलालेख (861 ई.):-

- यह शिलालेख फलौदी में घटियाला में एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है जिसमें प्रतिहार शासक कक्कुक के बारे में उल्लेख किया गया है।
- इसमें रोहिलिद्ध से कक्कुक तक प्रतिहार शासकों की वंशावली मिलती है।
- इस शिलालेख से कक्कुक द्वारा आभीरों को परास्त करने की जानकारी मिलती है।
- इसमें मग जाति के ब्रह्माणों का उल्लेख मिलता है।
- कक्कुक द्वारा यह शिलालेख उत्कीर्ण करवाया गया है जिसका रचयिता मग तथा उत्कीर्णकर्ता कृष्णेश्वर था।
- राजस्थान में पहली बार सही प्रथा की जानकारी देता है।

सांमोली शिलालेख (646 ई.) :-

- उदयपुर से प्राप्त यह शिलालेख गुहिल शासक **शिलादित्य** के समय का है।
- इस शिलालेख से मेवाड़ के गुहिल वंश की सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस शिलालेख की भाषा संस्कृत एवं लिपि कुटिल है। वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- डॉ. ओझा ने इसे अजमेर संग्रहालय में रखवाया

6. निम्न में से कौनसा शिलालेख राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख कहलाता है?

(a) नगरी का शिलालेख
(b) सामोली का शिलालेख
(c) किराडू का शिलालेख
(b) बरली का शिलालेख **उत्तर - d**

7. सांडेराव का लेख कंहा से यह शिलालेख प्राप्त हुआ।

(a) भीलवाड़ा (b) पाली
(c) चित्तौड़गढ़ (d) जोधपुर **उत्तर - b**

8. राजस्थान के कौन से ताम्रपत्र से रानी कर्मवती द्वारा जौहर के प्रमाण मिलते हैं -

(a) आहड ताम्रपत्र (b) खेरोदा ताम्रपत्र
(c) पुर ताम्रपत्र (d)चीकली ताम्रपत्र
उत्तर - c

9. आहड़ के ताम्रपत्र (1206) से हमें जानकारी मिलती है -

(a) महाराणा कुम्भा ने कीर्तिस्तम्भ का निर्माण करवाया था ।
(b) महाराणा राजसिंह ने राजसमंद झील का निर्माण करवाया था ।
(c) गुजरात के शासक भीमदेव के समय में मेवाड़ पर गुजरात का अधिकार था ।
(d) किसानों से वसूल की जाने वाली विविध लाग - बागों का पता चलता है ।
उत्तर - c

10. मुण्डीयार की ख्यात मे किसका वर्णन है?

(a) आमेर के कछवाह शासको का वर्णन है
(b) मारवाड के राठौड शसको का वर्णन है
(c) कोटा के हाडा शासको का वर्णन है
(d) मेवाड के सिसोदिया शासको का वर्णन है
उत्तर - b

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है ।
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे। ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौंने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र

(Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।

- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृद्भाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृद्भाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।
- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी । नदी का नाम है – **सरस्वती नदी** । इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए । जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये । बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है ।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1.पूर्वी राजस्थानी 2.पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।

- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी । यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को '**जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति**' के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं । इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है ।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे ।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था ।
  (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है) **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे ।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे ।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौ, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

मृतक संस्कार :

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं ।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।
- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मद्भाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

प्रश्न-आहड़ सभ्यता के बारे में निम्न कथनों पर विचार कीजिए – [RAS. 2021]
(A) आहड़वासी तांबा गलाना जानते थे।
(B) ये लोग चावल से परिचित नहीं थे।
(C) धातु का काम आहड़वासियों की अर्थव्यवस्था का एक साधन था।
(D) यहाँ से काले - लाल रंग मृद्भाण्ड मिले हैं, जिन पर सामान्यतः सफेद रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ उकेरी गई हैं।
सही विकल्प का चयन कीजिए –
(1) A, B एवं C सही हैं
(2) A, C एवं D सही हैं
(3) A एवं B सही हैं
(4) C एवं D सही हैं **Ans. 2**

4. <u>बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़) :</u>

- बैराठ कोटपूतली-बहरोड़ जिले में शाहपुरा उपखण्ड में बाण गंगा नदी के किनारे स्थित लौह युगीन स्थल है।
- बैराठ का प्राचीन नाम **"विराट नगर"** ' था। महाजनपद काल में यह **मत्स्य जनपद** की **राजधानी** था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष **1936-37** में **दयाराम साहनी** द्वारा तथा **1962-63** में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा किया गया।
- वर्ष 1837 में कैप्टन बर्ट ने यहाँ से मौर्य सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख की खोज की । वर्तमान में यह शिलालेख **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।
- **भाब्रू शिलालेख** में सम्राट अशोक को मगध का राजा 'नाम से संबोधित किया गया है।
- भाब्रू शिलालेख के नीचे **बुद्ध, धम्म एवं संघ** लिखा हुआ है।
- बैराठ में **बीजक की पहाड़ी, भीम जी की डूंगरी** तथा **महादेव जी की डूंगरी** से उत्खनन कार्य किया गया ।
- यहाँ से मौर्य कालीन तथा इसके बाद के समय के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ से **36 मुद्राएँ** प्राप्त हुई हैं, जिनमें 8 **पंचमार्क चाँदी** की तथा **28 इण्डो-ग्रीक** तथा यूनानी शासकों की हैं । **16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेण्डर** की हैं।
- उत्तर भारतीय चमकीले मृद्भाण्ड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल **बैराठ** में है।
- वर्ष 1999 में बीजक की पहाड़ी से अशोक कालीन गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष मिले हैं जो **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित है ।
- बैराठ सभ्यता के लोगों का जीवन पूर्णतः ग्रामीण संस्कृति का था।
- बैराठ में पाषाण कालीन **हथियारों** के निर्माण का **एक बड़ा कारखाना** स्थित था ।
- यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- यहाँ पर **शुंग एवं कुषाण कालीन** अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- ये सभी एक मृद्भाण्ड में सूती कपड़े से बंधी मिली है।
- बैराठ सभ्यता के लोग **लौह धातु से परिचित** थे । यहाँ उत्खनन से लौहे के तीर तथा भाले प्राप्त हुए हैं ।
- माना जाता है कि **हूण शासक मिहिर** कुल ने बैराठ को नष्ट कर दिया ।
- **634 ई. में ह्वेनसांग विराट** नगर आया था तथा उसने यहाँ बौद्ध मठों की संख्या **8 बताई** है ।
- बैराठ से **'शंखलिपि'** के प्रमाण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ से **मुग़ल काल में टकसाल** होने के प्रमाण मिलते है । यहाँ मुग़ल काल में ढाले गये सिक्कों पर **बैराठ अंकित'** मिलता है।
- यहाँ बनेड़ी, ब्रह्मकुण्ड तथा जीण गोर की पहाड़ियों से वृषभ, **हिरण तथा वनस्पति** का चित्रण प्राप्त होता है।

5. <u>गणेश्वर (नीमकाथाना):</u>

- **सीकर जिले के नीमकाथाना** स्थान से कुछ दूरी पर स्थित गणेश्वर नामक स्थान से उत्खनन में **ताम्र युगीन** उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह स्थान काँतली नदी के किनारे स्थित है।
- गणेश्वर को **पूर्व हड़प्पा कालीन सभ्यता** माना जाता है। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- गणेश्वर सभ्यता 2800 ईसा पूर्व में विकसित हुई थी।
- गणेश्वर को **"पुरातत्व का पुष्कर"** भी कहा जाता है।
- भारत में पहली बार किसी स्थान से इतनी मात्रा में ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर से **ताँबे का बाण** एवं **मछली पकड़ने का कांटा** प्राप्त हुआ है ।
- इन उपकरणों में तीर, भाले, सूइयां, कुल्हाड़ी, मछली पकड़ने के कांटे आदि शामिल है ।
- गणेश्वर को भारत में **'ताम्र युगीन सभ्यताओं की 'जननी'** कहा जाता है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **रत्न चंद्र अग्रवाल** द्वारा 1977 में तथा विस्तृत उत्खनन 1978-79 में **विजय कुमार द्वारा** करवाया गया ।
- गणेश्वर से उत्खनन में जो मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं उन्हें **कपिषवर्णी मृद्पात्र** कहते हैं।
- गणेश्वर से **मिट्टी के छल्लेदार बर्तन** भी प्राप्त हुए हैं।
- गणेश्वर से **काले एवं नीले रंग** से अलंकृत मृद्पात्र मिले हैं।
- गणेश्वर में बस्ती को बाढ़ से बचाने हेतु वृहदाकार पत्थर के बाँध बनाने के प्रमाण मिले हैं ।
- गणेश्वर में **ईंटों** के उपयाग के **प्रमाण नहीं** मिले हैं ।
- मिट्टी के छल्लेदार बर्तन केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर सभ्यता के उत्खनन से **दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्र पिन** भी प्राप्त हुई है ।
- गणेश्वर सभ्यता के लोग गाय, बैल, बकरी, सुअर, कुत्ता, गधा आदि पालते थे ।
- गणेश्वर सभ्यता को **'ताम्र संचयी संस्कृति'** भी कहा जाता है ।

मेवाड़ के पुरातात्विक स्त्रोत

नगरी का लेख (200 बी.सी. - 150 बी.सी.)

- यह चित्तौड़गढ़ जिले के प्राचीनतम नगर माध्यमिक या नगरी से प्राप्त शिलालेख है, जो जैन या बौद्धों से संबंधित है। यह बहुत छोटा शिलालेख है।

नाथ-प्रशस्ति-एकलिंगजी (971 ई.)

- यह उदयपुर के पास स्थित कैलाशपुरी एकलिंगजी के लकुलीश मंदिर में नरवाहन के समय का संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि का अभिलेख है।

जैन कीर्ति स्तंभ लेख (13 वीं सदी)

- चित्तौड़ दुर्ग में स्थित रणकपुर के चौमुखा मंदिर (आदिनाथ मंदिर) में सस्कृत भाषा व नागरी लिपि में उत्कीर्ण इसमें कुम्भा के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

विजय, स्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.)

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तंभ पर उत्कीर्ण। इसका प्रशस्तिकार कवि अत्रि व उसका पुत्र **महेश भट्ट** था। इसमें बाण, हम्मीर मोकल का उल्लेख मिलता है। गणेश, शिव स्तुति मिलती है।
- इसमें कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थों, विरुदों ; दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरुद्ध का उल्लेख तथा मालवा व गुजरात की सम्मिलित सेना को हराने का उल्लेख मिलता है।

कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) :-

- यह लेख राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भस्यांम मंदिर (मामादेव का मदिर - वर्तमान नाम) में संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है। इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिंग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।
- इसमें मुख्यत: कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है।
- इसका रचयिता कान्हा व्यास है। जबकि डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652) :-

- यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।
- इसमें बापा से साँगा तक की उपलब्धियों का वर्णन है।
- यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।
- यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्रकार भाणा व उसके पुत्र मुकुन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

राजप्रशस्ति (1676) :-

- यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 25 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है, यह विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति अभलेख है।
- इसका रचयिता तैलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।
- मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन मिलता है।
- यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियां जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

चौहान वंश का इतिहास

अजमेर के चौहान

वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम)

शाकभरी का प्राचीन नाम सपादलक्ष था। सपादलक्ष का अर्थ सवा लाख गांवों का समूह। यहीं पर वासुदेव चौहान (वासुदेव प्रथम) ने चौहान वंश की नींव डाली। इसलिए इन्हें चौहानों का आदि पुरुष भी कहते हैं । वासुदेव प्रथम शाकम्भरी / सांभर को अपनी राजधानी बनाया। सांभर झील का निर्माण भी इसी शासक ने करवाया।

पृथ्वीराज प्रथम

चौहान वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक पृथ्वीराज प्रथम था। पृथ्वीराज प्रथम ने गुजरात के भडौंच पर अधिकार कर वहां आशापूर्णा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अजयराज प्रथम

पृथ्वीराज के बाद अजयराज शासक बना। **अजयराज ने 1113 ई. में पहाडियों के मध्य अजमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की** और इसे नई राजधानी बनाया। अजयराज ने पहाडियों के मध्य अजमेर के दुर्ग का निर्माण करवाया। मेवाड़ के पृथ्वीराज सिसोदिया ने 15 वीं सदी में इसका नाम तारागढ़ दुर्ग कर दिया। इस दुर्ग को पूर्व का जिब्राल्टर कहा जाता है।

अर्णोराज (1133-1155 ई.)

अर्णोराज अजयराज का पुत्र था। अर्णोराज का शासनकाल 1133 -1155 ई. तक रहा।

1. **अर्णोराज ने 1137 ई. में आनासागर झील का निर्माण करवाया ।**
2. **आर्णोराज ने पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण अर्णोराज ने करवाया ।**
3. अर्णोराज को गुजरात के चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में पराजित किया था
4. अर्णोराज के पुत्र जगदेव ने अर्णोराज की हत्या कर दी इसलिए जगदेव को चौहानों में पितृहन्ता कहा जाता है।

विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) (1153-1164 ई.)

1. बीसलदेव का कार्यकाल चौहान वंश का स्वर्णकाल कहा जाता है।
2. **बीसलदेव को कविबांधव भी कहा जाता है।**
3. बीसलदेव ने हरिकेलि (नाटक) की रचना की। जिसमें शिव-पार्वती व कुमार कार्तिकेय का वर्णन है।
4. बीसलदेव दरबारी कवि **नरपति नाल्ह ने बीसलदेव रासो ग्रन्थ की रचना की।**
5. बीसलदेव कवि **सोमदेव ने ललित विग्रहराज की रचना की।**

6. विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलसागर तालाब (वर्तमान बीसलपुर बाँध के स्थान पर) का निर्माण करवाया था।
7. 1153 से 1156 ई. के मध्य विग्रहराज (बीसलदेव) ने अजमेर में एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया जिसे **1200 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने संस्कृत विद्यालय को तुडवाकर अढ़ाई दिन का झोपडा बनवाया।**
8. विग्रहराज के बारे में किल होर्न ने लिखा है कि **"वह उन हिन्दू शासको में से एक था जो कालीदास व भवभूति से होड़ कर सकता था"।**

पृथ्वीराज तृतीय (पृथ्वीराज चौहान)

1177 ई. में पृथ्वीराज चौहान ने 11 वर्ष की अवस्था में राज गद्दी संभाली। उनके पिता का नाम सोमेश्वर तथा माता का नाम कर्पूरी देवी था।

रायपिथौरा – पृथ्वी राज तृतीय चौहान को यह उपाधि प्रदान की गई है।

- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **पुत्र गोविंदराज चौहान** था।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय का **प्रधानमंत्री - कैमास (कदंबदास)**
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय की उपाधियाँ** - राय पिथौरा, दल पंगुल (विश्व विजेता) आदि।
- **पृथ्वीराज चौहान तृतीय के दरबारी कवि** - चंदरबरदाई, वागीश्वर, विद्यापति गौड़, जयानक, जनार्दन, आशाधर आदि।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय अजमेर के चौहान वंश का अंतिम प्रतापी शासक था, जिसने दिल्ली और अजमेर राजधानीयों से शासन किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में शासक बने थे, इसलिए शासन की बागडोर इसकी माँ कर्पूरी देवी ने संभाली।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने भंडानक जाति एवं नागार्जुन के विद्रोह का दमन किया था।
- **महोबा/तुमुल का युद्ध** - पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने अपनी दिग्विजय की नीति के तहत 1182 ई० में **'महोबा के युद्ध/तुमुल का युद्ध'** (उत्तर प्रदेश) में परमर्दी देव चन्देल (परमर्दी देव के सेनापति आल्हा व उदल) को पराजित किया।
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय कन्नौज के राजा जयचंद गहड़वाल को हराकर उसकी पुत्री संयोगिता को स्वयंवर से उठाकर ले गया, जिससे पृथ्वीराज चौहान तृतीय एवं जयचंद गहड़वाल के बीच दुश्मनी बढ़ गयी। इसी वजह से तराइन के युद्ध में जयचंद गहड़वाल ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय की बजाय मोहम्मद गौरी की सहायता की थी।

तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.)

तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई० में पृथ्वीराज चौहान तृतीय व मोहम्मद गौरी के मध्य तराइन के मैदान करनाल (हरियाणा) में हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय की सेना की ओर से गोविंदराज तोमर ने तीर चलाया जिससे मोहम्मद गौरी घायल होकर वापस गजनी चला गया। इस प्रकार पृथ्वीराज चौहान तृतीय विजय हुई।

तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.)

तराइन का द्वितीय युद्ध भी पृथ्वीराज चौहान तथा मौहम्मद गौरी बीच लड़ा गया। इसमें मौहम्मद गौरी की विजय हुई। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के स्वसुर जयचंद ने मौहम्मद गौरी का साथ दिया, क्योकि पृथ्वीराज चौहान ने जयचंद की पुत्री संयोगिता का हरण कर उससे विवाह किया था।

1. पृथ्वीराज चौहान के मित्र एवं दरबारी कवि **चंद्रबरदाई ने पृथ्वीराज रासो नामक ग्रन्थ। लिखा**
2. **जयानक ने पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ लिखा।**
3. सूफी संत **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती पृथ्वी राज चौहान के समय अजमेर आये।**
4. पृथ्वीराज चौहान तृतीय के घोड़े का नाम नाट्यरंभा था

रणथम्भौर के चौहान

रणथम्भौर और दिल्ली सल्तनत

- हम्मीर चौहान (1282-1301 ई.) अपने पिता जैत्रसिंह का तीसरा पुत्र था। सभी पुत्रों में योग्य होने के कारण उसका राज्यारोहण उत्सव जैत्रसिंह ने अपने जीवनकाल में ही 1282 ई. में सम्पन्न करवा दिया था।
- वह रणथम्भौर के चौहान शासकों में अंतिम परंतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शासक था और उसके शासनकाल की जानकारी अनेकानेक ऐतिहासिक साधनों से प्राप्त होती है। मुस्लिम इतिहासकारों, अमीर खुसरो तथा जियाउद्दीन बरनी की रचनाओं के अलावा न्यायचंद्र सूरी के हम्मीर महाकाव्य, चंद्रशेखर के सुर्जन चरित्र और बाद में लिखे गये हिन्दी ग्रन्थों - जोधराजकृत हम्मीर रासो तथा चंद्रशेखर के हम्मीर हठ में हमें हम्मीर की शूरवीरता तथा विजयों का विस्तृत विवरण मिलता है।
- दिग्विजय के बाद हम्मीर ने कोटि यज्ञों का आयोजन किया जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- मेवाड़ के शासक समरसिंह को पराजित कर हम्मीर ने अपनी धाक सम्पूर्ण राजस्थान में जमा दी।

हम्मीर और जलालुद्दीन खिलजी-

- हम्मीर को अपनी शक्ति बढ़ाने का मौका इसलिए मिल गया कि इस दौरान दिल्ली में कमजोर सुल्तानों के कारण अव्यवस्था का दौर चल रहा था।
- 1290 ई. में दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने हम्मीर की बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने का निर्णय लिया। सुल्तान ने झाँई पर अधिकार कर रणथम्भौर को घेर लिया किन्तु सभी प्रयत्नों की असफलता के बाद शाही सेना को दिल्ली लौट जाना पड़ा।
- सुल्तान ने 1292 ई. में एक बार फिर रणथम्भौर विजय का प्रयास किया। हम्मीर के सफल प्रतिरोध के कारण इस बार भी उसे निराशा ही हाथ लगी।
- जलालुद्दीन ने यह कहते हुए दुर्ग का घेरा हटा लिया कि "मैं ऐसे सैंकड़ों किलों को भी मुसलमान के एक बाल के बराबर महत्त्व नहीं देता।"

- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के इन अभियानों का आँखों देखा वर्णन **अमीर खुसरो ने 'मिफ्ता-उल-फुतूह'** नामक ग्रंथ में किया है।
- 1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दिल्ली का सुल्तान बन गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिये जिनके निम्नलिखित कारण थे –

1. रणथम्भौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस अभेद दुर्ग पर अधिकार कर राजपूत नरेशों पर अपनी धाक जमाना चाहता था।
2. रणथम्भौर दिल्ली के काफी निकट था। इस कारण यहाँ के चौहानों की बढ़ती हुई शक्ति को अलाउद्दीन खिलजी किसी भी स्थिति में सहन नहीं कर सकता था।
3. अलाउद्दीन खिलजी से पहले उसके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर अधिकार करने के लिए दो बार प्रयास किए थे किन्तु वह असफल रहा। अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा की पराजय का बदला लेना चाहता था।
4. अलाउद्दीन खिलजी एक महत्त्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। रणथम्भौर पर आक्रमण इसी नीति का परिणाम था।

हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को शरण देना –

- नयनचन्द्र सूरी की रचना 'हम्मीर महाकाव्य' के अनुसार रणथम्भौर पर आक्रमण का कारण यहाँ के शासक हम्मीर द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही सेनापति मीर मुहम्मद शाह को शरण देना था।
- मुस्लिम इतिहासकार इसामी ने भी अपने विवरण में इसी कारण की पुष्टि की है। उन्होंने लिखा है कि 1299 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने दो सेनापतियों उलूग खां व नूसरत खां को गुजरात पर आक्रमण करने के लिए भेजा था।
- गुजरात विजय के बाद जब यह सेना वापिस लौट रही थी तो जालौर के पास लूट के माल के बंटवारे के प्रश्न पर 'नव-मुसलमानों' (जलालुद्दीन फिरोज खिलजी के समय भारत में बस चुके वे मंगोल, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था) ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि विद्रोहियों का बर्बरता के साथ दमन कर दिया गया किन्तु उनमें से मुहम्मदशाह व उसका भाई कैहब्रु भाग कर रणथम्भौर के शासक हम्मीर के पास पहुँचने में सफल हो गया।
- हम्मीर ने न केवल उन्हें शरण दी अपितु मुहम्मदशाह को 'जगाना' की जागीर भी दी। चन्द्रशेखर की रचना 'हम्मीर हठ' के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी की एक मराठा बेगम से मीर मुहम्मदशाह को प्रेम हो गया था और उन दोनों ने मिलकर अलाउद्दीन खिलजी को समाप्त करने का एक षड़यंत्र रचा।

अलाउद्दीन का चित्तौड़ पर आक्रमण

- अलाउद्दीन खिलजी की तरफ से इन विद्रोहियों को सौंप देने की माँग की गई। इस माँग को जब हम्मीर द्वारा ठुकरा दिया गया तो अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया।
- 1299 ई. के अंत में अलाउद्दीन खिलजी ने उलूग खां, अलप खां और नुसरत खां के नेतृत्व में एक सेना रणथम्भौर पर अधिकार करने के लिए भेजी। इस सेना ने 'रणथम्भौर की कुँजी' झाँई पर अधिकार कर लिया। इसामी के अनुसार विजय के बाद उलूग खां ने झाँई का नाम बदलकर 'नौ शहर' कर दिया।
- 'हम्मीर महाकाव्य' में लिखा है कि हम्मीर इस समय कोटियज्ञ समाप्त कर 'मुनिव्रत' में व्यस्त था। इस कारण स्वयं न जाकर अपने दो सेनापतियों – भीमसिंह व धर्मसिंह को सामना करने के लिए भेजा। इन दोनों सेनापतियों ने सेना को पीछे की तरफ खदेड़ दिया तथा उनसे लूट का माल छिन लिया।
- राजपूत सेना ने शत्रु सेना पर भयंकर हमला किया जिसमें अलाउद्दीन खिलजी की सेना को पराजय का सामना करना पड़ा। शाही सेना से लूटी गई सामग्री लेकर धर्मसिंह के नेतृत्व में सेना का एक दल तो रणथम्भौर लौट गया किन्तु भीमसिंह पीछे रह गया। इस अवसर का लाभ उठाकर बिखरी हुई शाही सेना ने अलपखां के नेतृत्व में उस पर हमला कर दिया। इस संघर्ष में भीमसिंह अपने सैंकड़ों सैनिकों सहित मारा गया। भीमसिंह की मृत्यु के लिए हम्मीर ने धर्मसिंह को उत्तरदायी मानते हुए उसे अंधा कर दिया और उसके स्थान पर भोजराज को नया मंत्री बनाया।
- झाँई विजय के बाद उलूग खां ने मेहलनसी नामक दूत के साथ हम्मीर के पास अलाउद्दीन खिलजी का संदेश पुनः भिजवाया। इस संदेश में दोनों विद्रोहियों – मुहम्मदशाह व उसके भाई कैहब्रु को सौंपने के साथ हम्मीर की बेटी देवलदी का विवाह सुल्तान के साथ करने की माँग की गई थी। यद्यपि देवलदी ने राज्य की रक्षा के लिए इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेने की सुझाव दिया किन्तु हम्मीर ने संघर्ष का रास्ता चुना।
- उलूग खां ने रणथम्भौर दुर्ग पर घेरा डालकर उसके चारों तरफ पाशिब व गरगच बनवाये और मगरबों द्वारा दुर्ग रक्षकों पर पत्थरों की बौछार की। दुर्ग में भी भैरव यंत्र, ठिकुलिया व मर्कटी यंत्र नामक पत्थर बरसाने वाले यंत्र लगे थे जिनके द्वारा फैंका गया एक पत्थर संयोग से नुसरत खां को लगा। **नुसरतखां** इसमें घायल हुआ और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।
- हम्मीर ने इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए दुर्ग से बाहर निकलकर शाही सेना पर आक्रमण कर दिया। इस अप्रत्याशित आक्रमण से घबराकर उलूग खां को झाँई की तरफ पीछे हटना पड़ा। उलूग खां की असफलता के बाद अलाउद्दीन खिलजी स्वयं रणथम्भौर पहुँचा।
- अमीर खुसरो ने अपनी रचना 'खजाईन-उल-फुतूह' में इस अभियान का आंखों देखा वर्णन करते हुए लिखा है कि सुल्तान ने इस आक्रमण में पाशेब, मगरबी व अर्रादा की सहायता ली।

- काफी प्रयासों के बाद भी जब अलाउद्दीन खिलजी दुर्ग को जीतने में असफल रहा तो उसने छल और कूटनीति का आश्रय लेते हुए हम्मीर के पास संधि का प्रस्ताव भेजा।
- हम्मीर द्वारा संधि के लिए अपने सेनापति रतिपाल को भेजा गया। अलाउद्दीन खिलजी ने रतिपाल व उसकी सहायता से हम्मीर के एक अन्य सेनापति रणमल को रणथम्भौर दुर्ग का प्रलोभन देकर अपनी ओर मिला लिया।
- अलाउद्दीन ने हम्मीर के एक अधिकारी को अपनी तरफ मिलाकर दुर्ग में स्थित खाद्य सामग्री को दूषित करवा दिया। इससे दुर्ग में खाद्यान सामग्री का भयंकर संकट पैदा हो गया।
- अमीर खुसरो ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "सोने के दो दानों के बदले में चावल का एक दाना भी नसीब नहीं हो पा रहा था।"
- खाद्यान्न के अभाव में हम्मीर को दुर्ग के बाहर निकलना पड़ा किन्तु रणमल और रतिपाल के विश्वासघात के कारण उसे पराजय का मुँह देखना पड़ा।
- युद्ध के दौरान हम्मीर लड़ता हुआ मारा गया और उसकी रानी रंगदेवी के नेतृत्व में राजपूत वीरांगनाओं द्वारा जौहर किया गया। और यह रणथम्भौर का प्रथम साका कहा जाता है।
- जोधराज की रचना 'हम्मीर रासो' के अनुसार इस जौहर में मुहम्मदशाह की स्त्रियाँ भी रंगदेवी के साथ चित्ता में भस्म हो गई।
- कुछ स्थानों पर उल्लेख है कि रंगदेवी ने किले में स्थित 'पदमला तालाब' में जल जौहर किया था।
- इस दौरान हम्मीर की पुत्री **देवल देवी** ने भी जौहर किया। **"देवलदो रो आत्मसर्ग"** की घटना इसी से जुड़ी हुई है।
- हम्मीर शिव का उपासक था जिसे अपनी हठधर्मिता के लिये जाना जाता है। हम्मीर के लिये कहा जाता है कि **"तिरिया तेल हम्मीर हठ चढ़े न दूजी बार"**।
- रणथम्भोर दुर्ग पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो जाने के उपरान्त अमीर खुसरो ने लिखा है कि **"क़ुफ का गढ़ इस्लाम का घर हो गया है"** ।
- 11 जुलाई, 1301 ई. को अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर अधिकार कर लिया। युद्ध में मीर मुहम्मदशाह भी हम्मीर की तरफ से संघर्ष करते हुए घायल हुआ।
- अलाउद्दीन खिलजी काफी क्रोधित हुआ और उसने हाथी के पैरों के नीचे कुचलवा कर मुहम्मदशाह की हत्या करवा दी।

हम्मीर का मूल्यांकन –

- हम्मीर ने अपने जीवन में कुल 17 युद्ध लड़े जिनमें से 16 में वह विजयी रहा। बार-बार के प्रयासों के बाद भी जलालुद्दीन खिलजी का रणथम्भौर पर अधिकार नहीं कर पाना हम्मीर की शूरवीरता व सैनिक योग्यता का स्पष्ट प्रमाण है।
- वह वीर योद्धा ही नहीं अपितु एक उदार शासक भी था।
- विद्वानों के प्रति हम्मीर की बड़ी श्रद्धा थी। विजयादित्य उसका सम्मानित दरबारी कवि तथा राघवदेव उसका गुरु था।
- हम्मीर अपने वचन व शरणागत की रक्षा के लिए इतिहास में प्रसिद्ध है। उसने अपनी शरण में आए अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोहियों को न लौटाने का हठ कर लिया।
- नयनचन्द्र सूरी की रचना हम्मीर महाकाव्य, व्यास भाण्ड रचित हम्मीरायण, जोधराज रचित हम्मीर रासो, अमृत कैलाश रचित 'हम्मीर बन्धन' और चन्द्रशेखर द्वारा रचित 'हम्मीर हठ' नामक ग्रंथों की रचना इसी हम्मीर को नायक बनाकर की गई है।
- सन् 1290 में खिलजी वंश के संस्थापक **जलालुद्दीन खिलजी** ने रणथम्भौर दुर्ग पर आक्रमण किया। इस दौरान हम्मीर का सेनापति **गुरुदास सैनी** मारा गया।
- जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर दुर्ग के पास स्थित **झाइन दुर्ग** पर अधिकार कर लिया जिसे वर्तमान में **छान या छाण** कहा जाता है
- इस विजय से उत्साहित होकर जलालुद्दीन ने रणथम्भौर दुर्ग का घेरा डाला लेकिन दुर्ग पर अधिकार करने में असफल रहा। अन्त में 1291 में दिल्ली लोट आया।
- **नोट** :- जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर दुर्ग के बारे में कहा था "ऐसे 10 दुर्गो को भी मैं मुसलमानों के एक बाल के बराबर नही समझता"।
- पृथ्वीराज चौहान के पुत्र **गोविन्दराज** ने रणथम्भौर के चौहान वंश की नीव रखी।
- **मोहम्मद गौरी** ने अपने दास **कुतुबुद्दीन ऐबक** को रणथम्भौर का प्रशासक नियुक्त किया।
- गोविन्दराज का पुत्र **बल्हण** भी दिल्ली सल्तनत को उचित रूप से कर भेजता रहा। अतः इस समय तक रणथम्भौर शासकों के दिल्ली सल्तनत के साथ अच्छे सम्बन्ध रहे।
- सन् 1226 में **इल्तुतमिश** ने रणथम्भोर पर असफल आक्रमण किया।
- सन् 1236 में इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **रुकुनुद्दीन फिरोज** उत्तराधिकारी हुआ जो कि अयोग्य एवं दुर्बल शासक था।
- रणथम्भौर दुर्ग में **बाघ भट्ट** ने इस दुर्ग का घेरा डाला। इल्तुतमिश की पुत्री **रजिया बेगम** ने **हसन गौरी** को रणथम्भोर दुर्ग के विरुद्ध भेजा।
- सन् 1248 में **नासिरुद्दीन महमुद** के प्रधानमंत्री **बलबन** ने इस दुर्ग पर असफल आक्रमण किया। इस दौरान **तुर्क** सेनापति **बहाउद्दीन** मारा गया। सन् 1253-54 में बलबन ने पुनः इस दुर्ग पर आक्रमण किया।
- **श्रेणी-** रणथम्भौर दुर्ग दुर्गों की गिरि श्रेणी, वन श्रेणी तथा ऐरण श्रेणी तीनों श्रेणियों में आता है।
- **स्थान-** रणथम्भौर दुर्ग राजस्थान राज्य के सवाईमाधोपुर जिले की थंभौर पहाड़ी पर स्थित है।
- **प्राचीन नाम (वास्तविक नाम)-** रणथम्भौर दुर्ग का प्राचीन नाम या वास्तविक नाम रणस्तम्भपुर (रन्तपुर) है जिसका अर्थ है रण की घाटी में स्थित नगर।
- **उपनाम या अन्य नाम-** रणथम्भौर दुर्ग का उपनाम या अन्य नाम दुर्गा धिराज है।

प्रश्न- निम्नलिखित में कौन सा एक युग्म सही सुमेलित नहीं है? (RAS. 2021)

पुस्तकें	–	लेखक
(A) नेह तरंग	–	सवाई प्रतापसिंह
(B) नागदमण	–	सांयाजी झूला
(C) रणमल छन्द	–	श्रीधर व्यास
(D) भाषा भूषण	–	महाराजा जसवंत सिंह

(1) A (2) D
(3) B (4) C Ans. D

जसवन्त सिंह के दरबारी विद्वान

- दलपत मिश्र जसवन्त विलास
- नरहरिदास अवतार चरित्र
- रामचरित्र कथा

निर्माण कार्य

1. **जानसागर** - जसवन्त सिंह की रानी **अतिरंगदे** ने जोधपुर में जानसागर तालाब बनवाया जिसे शेखावतजी का तालाब भी कहते हैं।
2. **कल्याणसागर** - कल्याणसागर तालाब का निर्माण **रानी जसवन्तदे** ने जोधपुर में करवाया था, इसे **रतनाड़ा** भी कहा जाता है।
3. **राई का बाग-** जोधपुर में स्थित 'राई का बाग' का निर्माण जसवन्तदे ने 1663 ई. में करवाया था।
4. **जसवन्तपुरा** महाराजा जसवन्त सिंह ने औरंगाबाद के समीप जसवन्तपुरा कस्बा बसाया तथा यहाँ जसवन्त सागर तालाब बनवाया।
5. **महाराजा जसवन्त सिंह** ने काबुल से अनार के बीज लाकर जोधपुर के कागा के बाग में लगवाये थे। माना जाता है कि इसीलिए जोधपुर के अनार अपनी मिठास के लिए प्रसिद्ध हैं।

मुहणौत नैणसी (1610-1670 ई.)

- राजस्थान के क्रमबद्ध इतिहास लेखन के प्रथम इतिहासकार नैणसी का जन्म 1610 ई. में मारवाड़ में हुआ था।
- 1658 ई. में नैणसी महाराजा जसवन्त सिंह के दीवान नियुक्त हुए, परन्तु 1667 ई. में इन पर राजकीय धन के गबन का आरोप लगाकर बन्दी बना लिया गया।
- बन्दी अवस्था में जब नैणसी को औरंगाबाद से मारवाड़ लाया जा रहा था, तो **फुलसरी** ग्राम (महाराष्ट्र) में 1670 ई. में नैणसी ने आत्महत्या कर ली।

नैणसी की रचनाएँ

1. नैणसी री ख्यात
2. मारवाड़ रा परगना री विगत।

नैणसी री ख्यात में राजस्थान का समग्र इतिहास वर्णित है। इसी ख्यात के कारण मुंशी देवीप्रसाद ने नैणसी को राजपूताने का अबुल फजल कहा है।
'मारवाड़ रा परगना री विगत' में मारवाड़ रियासत का विस्तृत वर्णन उल्लिखित है।

दुर्गादास राठौड़

- पिता का नाम 'आसकरण' था जो कि 'लुणेवा' के जागीरदार थे।
- इनका जन्म स्थान सालवा था।
- अजीतसिंह ने शासक बनने के बाद दुर्गादास को देश निकाला दे दिया था।
- दुर्गादास यहाँ से मेवाड़ महाराणा 'अमरसिंह द्वितीय' के यहाँ चला गया।
- अमरसिंह ने इसे 'रामपुरा' व विजयपुर की जागीरें दी।
- यहाँ से दुर्गादास उज्जैन चला जाता है।
- **उज्जैन में क्षिप्रा नदी** के किनारे दुर्गादास की छतरी बनी हुई है।
- **दुर्गादास को 'मारवाड़ का अणबिंदिया मोती' तथा 'राजपूताने का गेरीबाल्डी'** कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड इसे **'राठौड़ों का यूलीसेज'** (उद्धारक) कहा।
- इन्होंने जसवन्त सिंह की मृत्यु के उनके पुत्र अजीतसिंह के संरक्षक का कार्य किया तथा औरंगजेब से उनकी रक्षा की।

महाराजा अजीतसिंह (1679 – 1724)

- महाराजा जसवन्त सिंह की मृत्यु के समय उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था। इसलिए बादशाह औरंगजेब ने मारवाड़ राज्य को खालसा घोषित कर दिया।
- जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद उनकी गर्भवती पत्नी ने 19 फरवरी, 1679 ई. को लाहौर में अजीतसिंह को जन्म दिया। अजीतसिंह के दिल्ली पहुँचने पर औरंगजेब ने उसे जोधपुर का राजा मानने से इन्कार कर जेल में डाल दिया।
- तब दुर्गादास ने अजीतसिंह को सरदारों की मदद से बाहर निकाला तथा इस कार्य में अजीतसिंह की **धाय गोरा धाय** ने अपने पुत्र का बलिदान दिया। **गौरा को मारवाड़ की पन्नाधाय** भी कहा जाता है।
- दुर्गादास अजीतसिंह को लेकर मेवाड़ चला गया तथा एक ब्राह्मण मुकुंद दास खिंची के यहाँ अजीतसिंह को छुपाकर उसकी परवरिश की।
- जहां पर उसने राजा बनने के लिए एक लम्बा संघर्ष किया। मेवाड़ में महाराणा राजसिंह ने उसे **केलवा** की जागीर दी। इस संघर्ष में राजसिंह ने राठौड़ों को खुला समर्थन दिया था।
- औरंगजेब ने अमरसिंह राठौड़ के पौत्र इन्द्रसिंह को 36 लाख रुपये के बदले में जोधपुर का शासक स्वीकार कर लिया था।
- औरंगजेब ने मेवाड़-मारवाड़ विरोध का दमन करने के लिए शाहजादे अकबर को भेजा, जिसने राजपूतों के समर्थन से। जनवरी, 1681 ई. को **नाडौल (पाली)** में स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया।
- औरंगजेब ने कूटनीति से अकबर-राजपूत गुट को भंग कर दिया। परिणामस्वरूप दुर्गादास अकबर को मराठा छत्रपति शम्भाजी के पास ले गया।

सैनिक छावनियाँ

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्यप्रदेश)
3. एरिनपुर (सिरोही)
4. देवली (Tonk)
5. ब्यावर (वर्तमान ब्यावर जिला)
6. खेरवाड़ा (Udaypur)

- नसीराबाद में 28 मई 1857 को प्रारंभ
- नीमच में 2जून 1857 को प्रारंभ
- एरिनपुर में 21 अगस्त 1857 को प्रारंभ
- बिथौड़ा का युद्ध 8 सितंबर 1857
- चेलावास का युद्ध 18 सितंबर 1857
- कोटा में जयदयाल व मेहराब खाँ
- धौलपुर में क्रांति का नेतृत्व रामचंद तथा दीरालाल ने किया
- जयपुर ने भाग नहीं लिया
- बीकानेर का शासक सरदार सिंह राज्य के बाहर सेना लेकर आया
- करौली शासक मदनपाल ने अंग्रेजो की मदद की।

अभ्यास प्रश्न

1. किस राज्य ने सबसे पहले अंग्रेजों से संधि की थी ?
(a) करौली (b) धौलपुर
(c) झालावाड़ (d) भरतपुर
उत्तर – a

2. 1857 के विद्रोह के समय भाग नहीं लेने वाली छावनियां थी ?
(a) देवली और ब्यावर छावनी
(b) खेरवाड़ा और एरिनपुरा छावनी
(c) देवली और खेरवाड़ा छावनी
(d) ब्यावर और खेरवाड़ा छावनी
उत्तर – d

3. बिथौड़ा के युद्ध में में खुशहाल सिंह के नेतृत्व में क्रांतिकारियों के सेना ने किस अंग्रेज अफसर की सेना को हराया था ?
(a) कैप्टन शावर्स
(b) जनरल रॉबर्ट
(c) ब्रिगेडियर जार्ज लारेंस
(d) कैप्टेन हिटकोट
उत्तर – d

4. जोधपुर के किस महाराजा ने अंग्रेजों का साथ देते हुए विद्रोहियों से युद्ध किया ?
(a) महाराजा मानसिहं
(b) महाराजा भीमसिहं
(C) महाराजा तख्तसिहं
(d) महाराजा बन्नेसिहं
उत्तर – c

5. 1857 के विद्रोह के दौरान, मेजर बर्टन और उसके दो पुत्र कहां पर मारे गए थे-
(a) नसीराबाद (b) निमच
(c) ब्यावर (d) कोटा
उत्तर – d

6. 1857 के विद्रोह के दौरान निम्न में से किस ठिकानेदार ने तात्या टोपे की सहायता की थी-
(a) आउवा के खुशाल सिंह चम्पावत
(b) बागोर के शिवदान सिंह
(c) सलूम्बर के केसरी सिंह
(d) असिन्द के दुले सिंह
उत्तर – c

7. भारत छोड़ो आन्दोलन के संचालन हेतु 'आजाद मोर्चा' का गठन कहाँ हुआ था।
(a) उदयपुर (b) बीकानेर
(c) जयपुर (d) जोधपुर
उत्तर – c

8. किस आयोग की सिफारिशों पर ठाकुर कुशालसिंह को रिहा किया गया-
a. ट्रेन्च आयोग
b. टेलर आयोग
c. आऊवा आयोग
d. बर्टन आयोग
उत्तर – b

9. मेहराब खां एवं जयदयाल ने कहां विद्रोह किया-
(a) टोंक में (b) कोटा में
(c) अजमेर में (d) धौलपुर में
उत्तर – b

10. 'आयो इंगरैज मुल्क रै ऊपर' किसकी रचना है-
(a) दुरसा आढ़ा (b) बांकीदास
(c) केसरीसिंह बारहठ (d) गिरधर आसिंया
उत्तर – b

कला संस्कृति

अध्याय - I

राजस्थान की वास्तु परम्परा

❖ प्रमुख मंदिर एवं मंदिर निर्माण की शैलियाँ

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।

➢ मंदिर निर्माण की शैलियाँ

भारत में मुख्यतः मंदिर निर्माण की 3 शैलियाँ है :-

1. नागर शैली / आर्य शैली → उत्तर भारत में
2. द्रविड़ शैली → दक्षिण भारत में
3. बेसर / चालुक्य शैली → मध्य भारत में [यह द्रविड व नागर शैली का मिश्रण है।]

- राजस्थान में अधिकांश मंदिर नागर शैली में बने हुए हैं।
- राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां -

प्रमुख मंदिर शैलियाँ-

मंदिर शैली	विशेषता
नागर शैली / आर्य शैली	विशाल गुम्बद व विशाल गर्भगृह
द्रविड़ शैली	स्तंभनुमा / पिरामिडनुमा मंदिर छतें या शिखर गजप्रष्ठकृत
बेसर शैली	द्रविड़ व नागर शैली का मिश्रण
ईकायतन शैली	जो मंदिर एक ही देवता को समर्पित हो
पंचायत शैली	मुख्या देवता व चारों ओर किनारों पर चार अन्य देवताओं (शिव, सूर्य, गणेश, शनि) के छोटे-छोटे मंदिर उदा.- ओसियां (जोधपुर) के मंदिर विशेषतः
महामारु / गुर्जर प्रतिहार शैली	राजस्थान में 8 वी से 12 वी शताब्दी तक अत्यधिक प्रचलित थी। हर्षनाथ मंदिर सीकर, किराडू मंदिर बाड़मेर
जैन शैली	संगमरमर का अधिक प्रयोग हुआ है। इसमें तीर्थकारों की विशाल प्रतिमाएं है तथा ये मंदिर गुफानुमा होतें है।

(1) नागर या आर्य शैली -

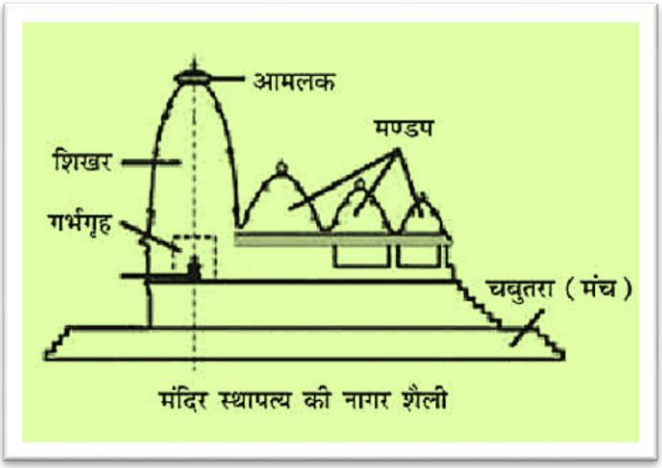

मंदिर स्थापत्य की नागर शैली

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर), दधिमति माता मंदिर (नागौर), ओसिया के मंदिर (जोधपुर)।

(2) भूमिज शैली

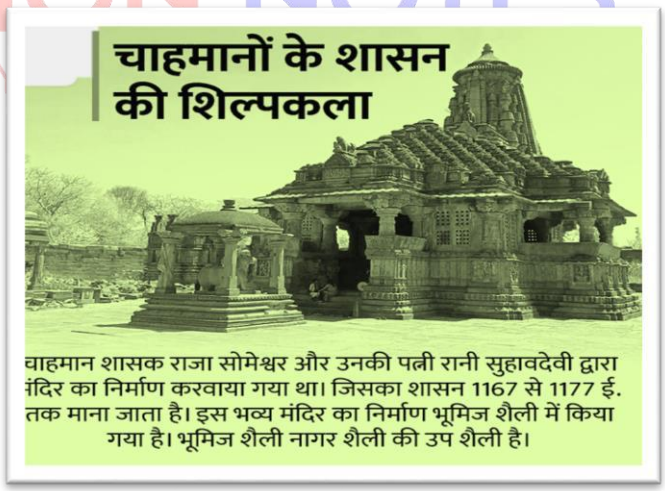

चाहमान शासक राजा सोमेश्वर और उनकी पत्नी रानी सुहावदेवी द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया था। जिसका शासन 1167 से 1177 ई. तक माना जाता है। इस भव्य मंदिर का निर्माण भूमिज शैली में किया गया है। भूमिज शैली नागर शैली की उप शैली है।

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती है।
- यह नागर शैली की उपशैली महामारु / प्रतिहार शैली की शैली है जिसके अंतर्गत मंदिर का गुंबद अनेक खण्डों में बंटा होता है।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न है- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3) द्रविड़ शैली

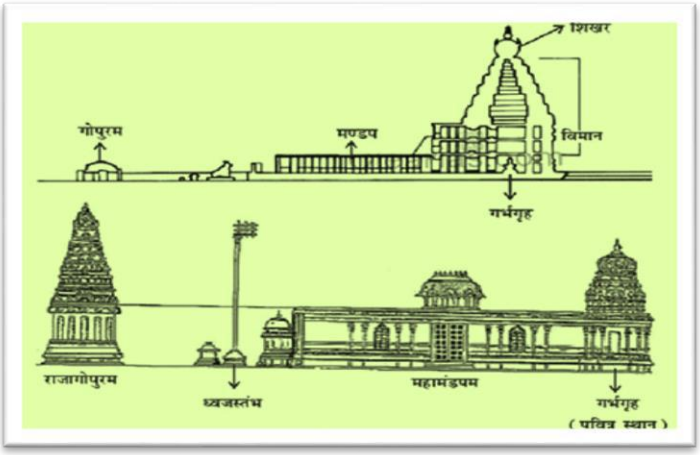

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- मंदिर में कई छोटे - छोटे मंदिर भी बने होते हैं जिन्हें 'देवरिया' कहा जाता है।
- मंदिर में अनेक कक्ष व जलकुंड बने होते हैं।
- ढका हुआ परिक्रमा पथ द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मंदिर (झालावाड़)।

(4) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता है।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते हैं।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते हैं तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

(5) राजसिंह शैली

यह भारत की प्राचीन पल्लव कला से विकसित शैली है। इस शैली का सर्वप्रथम उदाहरण 'शोर मंदिर' है । पल्लव कला की प्रमुख विशेषताएँ - सिंह स्तम्भ, मंडप के सुदृढ़ स्तम्भ, शिखर, चार दीवारी और उसमें भीतर की ओर बने हुए छोटे-छोटे कक्ष, अलंकरण इत्यादि है। यह शैली कैलाश मंदिर में पायी जाती है। इस शैली का ओर भी अधिक विकसित मंदिर बैकुठ पेरूमाल का है। इसमें गर्भ ग्रह मंडप और प्रवेश द्वार सभी एक-दूसरे से संबंध है। इसका प्रारंभ पल्लव नरेश नरसिंह वर्मन द्वितीय 'राजसिंह' ने किया था। इसके अंदर गुहा - मंदिरों के स्थान पर पाषाण, ईंट आदि की सहायता से इमारती मंदिरों का निर्माण करवाया गया।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (कोटपूतली-बहरोड़)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	• चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा) • मनोरथ स्वामी मंदिर (चित्तौड़) • मुकन्दर का शिव मंदिर, शीतलेश्वर महादेव मंदिर (झालरापाटन)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर), कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चितौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (जागौर) हर्षद माता (आभानेरी, दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया, जोधपुर)

I. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर - प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिए [RAS.2016]

(1) आहड़ का आदिवराह मंदिर

(2) आभानेरी का हर्षमाता का मंदिर

(3) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर

(4) ओसियाँ का हरिहर मंदिर

कूट :

(a) 1 , 2 , 3 और 4 (b) 1 , 2 और 4

(c) 1 और 4 **(d) 2 और 4**

➢ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

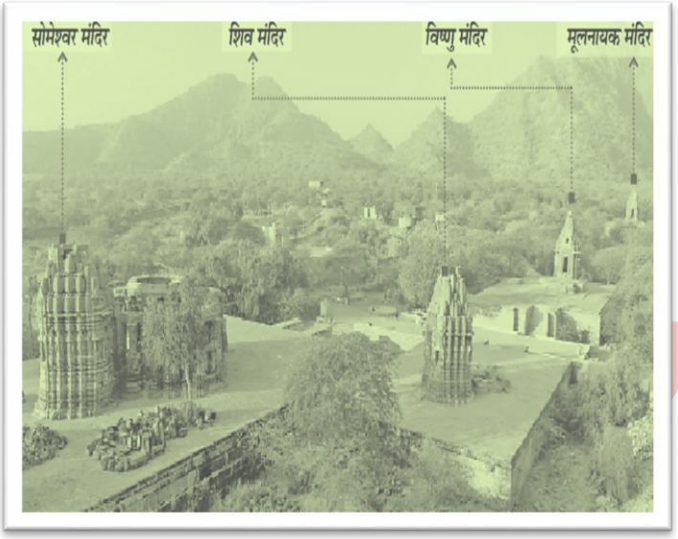

- सोमेश्वर मंदिर को रणछोड जी का मंदिर / खेड़िया बाबा / किराडू के मंदिर / भूरिया बाबा का मंदिर भी कहा जाता है।
- 11 वीं सदी के सोलंकी वास्तु शैली का एकमात्र मंदिर किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- यह मंदिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित है।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता है।
- इन मंदिरों में कुल पाँच मंदिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का है।
- इन मंदिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली है।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते हैं। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है।

➢ शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारू शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गाण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मंदिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर ' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मंदिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापति है।

➢ ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)

- पुष्कर ब्रह्मा मंदिर का उल्लेख पद्म पुराण में मिलता है।
- यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मंदिर है।
- इस मंदिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था, लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्त्व का स्मारक घोषित किया गया है।
- इस मंदिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे - छोटे मंदिर बने हुए हैं।
- NOTE- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छीछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बाड़मेर में स्थित है।

ब्रह्मा मंदिर (छींछ,बाँसवाड़ा) - *इस मंदिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मंदिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।*

ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बलोतरा) - *इसका निर्माण संत खेतरामजी महाराज ने करवाया।*

➢ ***सावित्री मंदिर (पुष्कर, अजमेर)***

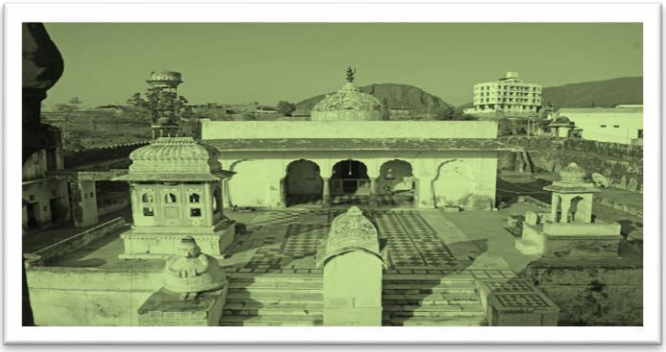

- *सावित्री मंदिर का निर्माण रत्नागिरि पर्वत पुष्कर, अजमेर में गोकुलचंद पारीक ने करवाया था।*
- *सावित्री जी का मेला भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को भरता है।*
- *यहाँ मई, 2016 में राजस्थान का तीसरा रोप वे बनाया गया*
- *कुछ जन अनुश्रुतियों के अनुसार यज्ञ के समय सावित्री माता अपने पति ब्रह्मा से रुठकर यहाँ चली आयी थीं। यहीं सावित्री माता ने ब्रह्माजी को श्राप दिया था कि उनकी पूजा पुष्कर के अतिरिक्त कहीं नहीं होगी।*

➢ ***एकलिंगनाथजी के मंदिर (कैलाशपुरी, उदयपुर)***

- *इस मंदिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल (कालभोज) ने करवाया।*
- *राणा मोकल ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था।*
- *इसमें एकलिंगजी की चतुर्मखी काले पत्थर की मूर्ति है।*
- *इसमें उत्तर मुख को ब्रह्मा, दक्षिण मुख को शिव, पूर्व मुख को सूर्य, पश्चिम मुख को विष्णु कहा जाता है।*
- *यह मंदिर लकुलीश मंदिर कहलाता है। राजस्थान में पाशुपत सम्प्रदाय (लकुलीश सम्प्रदाय) का यह एकमात्र मंदिर है।*
- *एकलिंगजी को मेवाड़ शासक अपना वास्तविक राजा मानते हैं।*
- *इस मंदिर की तलहटी में महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित विष्णु मंदिर है,जिसे लोग ' मीराबाई का मंदिर' भी कहते है ।*

❖ ***ऋषभदेव मंदिर धूलेव (उदयपुर)***

- *ऋषभदेवजी (आदिनाथ जी) का मंदिर धूलेव (उदयपुर) में स्थित है।*
- *वैष्णव धर्म के अनुयायी, ऋषभदेव जी को विष्णु का अवतार मानते हैं।*
- *आदिवासी लोग ऋषभदेवजी को 'कालाजी' के नाम से जानते हैं।*
- *इस मंदिर में सर्वाधिक केसर का भोग लगने के कारण इसे केसरियानाथ जी का मंदिर भी कहते हैं।*
- *यह मंदिर कोयल नदी के तट पर स्थित है तथा 1100 खम्भों पर बना है।*
- *इस मंदिर में 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासन मुद्रा में मूर्ति है।*
- *यहाँ पर चैत्र कृष्ण अष्टमी को मेला भरता है। यहाँ दिगम्बर, श्वेताम्बर, वैष्णव, शैव मंदिर हैं।*
- *भारत का यह एकमात्र ऐसा मंदिर है जिसमें वैष्णव तथा मुस्लिम समान रूप से पूजा करते हैं।*
- *कोर्ट के आदेशानुसार मंदिर की पूजा जैन करते है इस कारण ये मंदिर जैनों व भील जनजाति के मध्य विवादित है।*

➢ ***जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर)***

- *इस मंदिर का निर्माण गुहिल वंशीय राजा अल्लट ने लगभग 925 ई. में करवाया।*
- *इस मंदिर में दुर्गा के प्रमुख रूपों में एक रूप महिषासुरमर्दिनी रूप सर्वप्रमुख है।*
- *इस मंदिर में नृत्य करते हुए गणपति की विशाल प्रतिमा स्थित है।*
- *इसे राजस्थान के मंदिरों की मणि माला का चमकता मोती भी कहा जाता है।*

- इसे राजस्थान का अमृतसर भी कहते हैं।
- इसका निर्माण बाबा फतेहसिंह ने करवाया।
- श्रावण अमावस्या को यहाँ विशाल मेला भरता है (जबकि सिक्खों का राजस्थान में सबसे बड़ा मेला कार्तिक पूर्णिमा के दिन साहवा (चूरू) में भरता है।
- अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के बाद यह भारत का सबसे बड़ा गुरुद्वारा माना जाता है।

➢ **तनोट माता का मंदिर (तनोट, जैसलमेर)**

- इन्हें सैनिकों की देवी, थार की वैष्णो देवी, रुमाल वाली देवी व बी. एस. एफ. के जवानों की देवी कहते हैं।
- वर्तमान में सीमा सुरक्षा बल की 139वीं वाहिनी के जवान माता के पुजारी हैं।
- वर्ष 1965 के भारत - पाक युद्ध में पाकिस्तानी सेना की ओर से मंदिर के इलाके में करीब 3000 बम गिराए थे, लेकिन मंदिर को कोई नुकसान नहीं हुआ और सभी बम बेअसर हो गए थे।
- इस मंदिर परिसर में लगे शिलालेख के अनुसार जैसलमेर क्षेत्र के निवासी मामडियांजी की पहली संतान के रूप में विक्रम संवत् 808 चैत्र सुदी नवमी मंगलवार को भगवतीश्री आवड़देवी यानी तनोट माता का जन्म हुआ था।
- माता की 6 बहनें आशी, सेसी, गेहली, होल, रूप और लांग थीं। देवी मां ने जन्म के बाद क्षेत्र में बहुत से चमत्कार दिखाए और लोगों का कल्याण किया।
- इस क्षेत्र में राजा भाटी तनुरावजी ने वि.सं. 847 में तनोट गढ़ की नींव रखी थी। इसके बाद यहाँ देवी माँ का मंदिर बनवाया गया और वे तनोट राय माता के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

➢ **सुन्धा माता मंदिर (जसवंतपुरा, जालौर)**

- सुंधा माता मंदिर का निर्माण जालोर के चौहान शासक चाचिगदेव ने विक्रम संवत् 1319 में अक्षय तृतीया को की थी।
- यह मंदिर सुन्धा पर्वत पर स्थित है।
- सुंधामाता को अघटेश्वरी कहा जाता है जिसका अभिप्राय है- वह घट (धड़) रहित देवी, जिसका केवल सिर ही पूजा जाता है।
- इस मंदिर में 20 दिसम्बर, 2006 में राजस्थान का प्रथम रोप-वे स्थापित किया गया।
- सुंधा माता इलाके को प्रदेश का पहला और देश का चौथा भालू अभ्यारण्य बनाया गया।

➢ **कसुआ का शिव मंदिर (कोटा)**

- इस मंदिर में मिले शिलालेख के अनुसार मंदिर का निर्माण 738 ई. में मौर्यवंशी नरेश धवल के सामंत ब्राह्मण राजा शिवगण ने करवाया था।
- यहाँ 1008 मुखी शिवलिंग बने हुए हैं। इस मंदिर में चतुर्मुखी शिवलिंग की पूजा होती है।
- यह दुनिया का एकमात्र मंदिर है जहाँ भगवान शिव के साथ उनका पूरा परिवार विराजमान है।
- यहाँ भगवान शिव के साथ माता पार्वती और उनके दोनों पुत्र भगवान गणेश और कार्तिकेय के साथ पुत्री अशोका सुंदरी भी विराजमान हैं।
- आश्रम में शिवगण, नंदी और भैरव भी विराजमान हैं।
- पौराणिक मान्यताओं और शिलालेखों के अनुसार किसी समय यह महर्षि कण्व का आश्रम था। बताया जाता है कि इसी जगह शकुंतला और उनके बेटे भरत का पालन पोषण हुआ था। भरत के नाम पर देश का नाम भारत रखा गया।

➢ **विभीषण मंदिर (कैथून, कोटा)**

- यह भारत का एकमात्र विभीषण मंदिर है।
- यह मंदिर लगभग 2000 साल से भी ज्यादा पुराना है। पहले यहाँ प्रतिमा के ऊपर केवल एक छतरी ही थी। वर्ष 1970 से 1988 के बीच कोटा के तत्कालीन महाराजा उम्मेद सिंह प्रथम ने प्रतिमा पर छतरी का निर्माण करवाया था।
- कैथून में विभीषण को धर्म पुरुष के रूप में पूजा जाता है। होली के अवसर पर 7 दिन का मेला लगता है।
- इस मेले की मुख्य विशेषता यह है की होलिका दहन के दूसरे दिन धुलण्डी पर भारत में एकमात्र स्थान जहाँ पर हिरण्यकश्यप के पुतले का दहन किया जाता है।
- मंदिर में स्थापित प्रतिमा का केवल धड़ से ऊपर का भाग ही दिखता है। स्थानीय लोगों की जानकारी के अनुसार यह प्रतिमा हर साल जौ के दाँने के बराबर जमीन में धंसती है।
- एक पौराणिक कथा के अनुसार कहा जाता है कि भगवान राम के राज्याभिषेक के समय शिवजी ने मृत्युलोक की सैर करने की इच्छा प्रकट की। जिसके बाद विभीषण ने कांवड़ पर बिठाकर भगवान शंकर और हनुमान को सैर कराने की इच्छा प्रकट की। इस पर शिवजी ने शर्त रख दी कि जहाँ भी उनका कांवड़ जमीन को छुएगा, यात्रा वहीं खत्म हो जाएगी। विभीषण शिवजी और हनुमान को लेकर यात्रा पर निकले। कुछ स्थानों के भ्रमण के बाद विभीषण का पैर कैथून कस्बे में धरती पर पड़ गया और यात्रा खत्म हो गई। कांवड़ का अगला सिरा आगे चौरचौमा में और दूसरा हिस्सा कोटा के रंगबाड़ी इलाके में पड़ा। ऐसे में रंगबाड़ी में भगवान हनुमान और चौरचौमा में शिव शंकर का मंदिर स्थापित किया गया और जहां विभीषण का पैर पड़ा, वहां विभीषण मंदिर का निर्माण करवाया गया।

➢ मथुराधीश मंदिर (पाटनपोल, कोटा)

- यह वल्लभ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है।
- यहाँ स्थित भगवान कृष्ण की मूर्ति को 1670 ई. में बूँदी लाया गया, जहाँ से 1745 ई. में दुर्जनशाल हाड़ा कोटा लेकर आये तथा मंदिर का निर्माण करवाया।
- यहाँ दीपावली पर अन्नकूट, होली पर फागोत्सव तथा जन्माष्टमी पर जन्द महोत्सव किये जाते थे।

➢ रणकपुर जैन मंदिर (पाली)

- इस मंदिर का निर्माण सेठ धरणक शाह पोरवाल ने राणा कुम्भा के समय करवाया था।
- इसका निर्माण कार्य 1446 ई. में प्रारंभ हुआ और 1496 ई. में बनकर तैयार हुआ। इसके प्रमुख शिल्पकार देपाक सोमपुरा ब्राह्मण थे। इस मंदिर के निर्माण पर उस समय 99 लाख रुपए का खर्चा हुआ था।
- इस मंदिर में आदिनाथ / ऋषभदेव की 5 फीट ऊँची संगमरमर की मूर्ति लगी है। इस मंदिर के मुख्य द्वार की छत पर ऋषभदेव की माता मारुदेवी की हाथी पर बैठे मूर्ति है।
- इस मंदिर में कुल 24 मण्डप, 84 शिखर, 1444 स्तंभ / खम्भे है जिस कारण इसे स्तंभों / खम्भों का अजायबघर कहते है।
- इस मंदिर की आकृति विमान की आकृति के समान होने के कारण नलिनीगुल्मविमान नाम दिया गया तथा मंदिर के 4 द्वार, 4 मंडप व भगवान की 4 प्रतिमाएं स्थित हैं, इसलिए चौमुखा जिनालय भी कहते है।
- इस मंदिर के प्रवेश द्वार पर लगे शिलालेख में इसे श्री चतुर्मुख युगादीश्वर विहार तथा त्रैलोक्य दीपक कहते है। इस मंदिर में दो विशाल घंटे लगे हुए है जिनके घटनांद से नर व मादा का भेद ज्ञात होता है।
- फर्ग्युसन का कथन - "मैं अन्य ऐसा कोई भवन नहीं जानता जो इतना रोचक व प्रभावशाली हो या जो स्तम्भों की व्यवस्था में इतनी सुन्दरता व्यक्त करता है।"
- इस मंदिर के पास ही नेमिनाथ जैन मंदिर स्थित है।
- इस मंदिर की दीवारों पर नग्न मूर्तियाँ है जिस कारण इसे पातरिया रो देहरो कहते है अर्थात् वेश्याओं का मंदिर कहा जाता है। मंदिर की दीवारों पर लगी संभोग मुद्रा की मूर्तिया ' काम ' को ईश्वर प्राप्ति में बाधा को प्रकट करती है।

➢ परशुराम महादेव मंदिर (आदड़ी, पाली)

➢ बंधेज

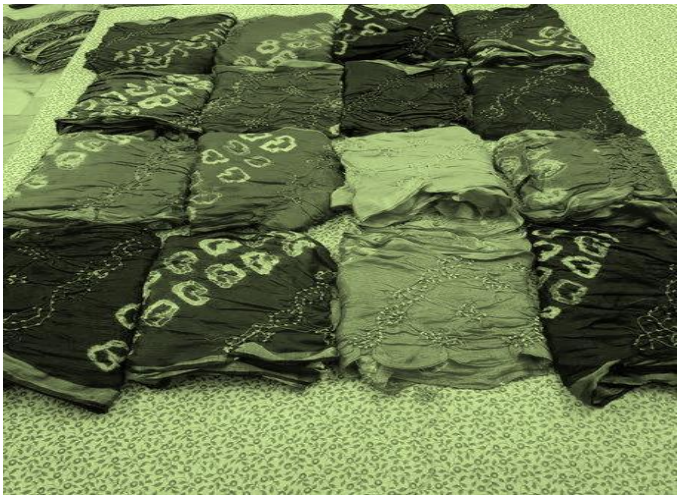

- एक प्रकार की तकनीक है, जिसमें कपड़े को बांध कर रंग चढ़ाया जाता है। बंधेज के लिए जयपुर, जोधपुर व शेखावाटी प्रसिद्ध हैं।
- बंधेज के लिए जोधपुर के तैयब खां को पद्म श्री अवार्ड दिया गया।
- बंधेज का सर्वप्रथम उल्लेख हर्ष चरित में मिलता है जिसकी रचना बाणभट्ट ने की थी।
- बंधेज की सबसे बड़ी मण्डी जोधपुर है, परंतु काम सुजानगढ़ में ही अधिक होता है। यहाँ के मुबारकजी तथा खाजूजी छीपा का नाम बंधेज में अग्रणी रहा है ।
- बंधेज का काम मूल रूप से चढ़वा जाति के मुसलमानों द्वारा किया जाता है।
- बंधेज के कार्य को टाई एंड डाइ की कला भी कहते हैं।
- इसका प्रारंभ सीकर से हुआ।
- बंधेज के कार्य के लिए जो सर्वप्रथम कपडे पर जो अलंकरण बनाया जाता है उसे टीपना कहते है
- बंधेज की चुनरी व साडी जोधपुर की प्रसिद्ध है।
- लहरिया जयपुर के प्रसिद्ध है।
- मोठडे जोधपुर के प्रसिद्ध है।
- पाटोदा (सीकर) का लुगड़ा प्रसिद्ध है।
- पोमचा जयपुर का प्रसिद्ध है, यह जच्चा स्त्रियों को पहनाया जाता है ।
- पीला पोमचा शेखावटी का प्रसिद्ध है।
- बंधेज की सबसे बडी मंडी जोधपुर में है ।
- जोधपुर की चुनरी बंधेज प्रसिद्ध है। जोधपुर की बंधेज की साड़ियाँ का काम पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यह कला मुल्तान से मारवाड़ में आयी।
- बंधेज कला द्वारा पाँच रंगों से रंगा गया साफा **बावरा** कहलाता है।
- बंधेज का साफा तथा चुनरी लाडनू (डीडवाना-कुचामन) का प्रसिद्ध है , जो असम तथा कलकत्ता तक पहुँचता है ।
- केवल एक रंग से तैयार साफा, जिसमें सफेद बूंदे होती है, **राजशाही** कहलाता है ।
- बंधेज लहरिया- कपड़े को एक सिरे से दूसरे सिरे तक बांधने से धारियाँ बन जाती है। यह बंधेज **लहरिया** कहलाता है।
- लहरिया फोहनीदार, जालदार, खत, पचलड़ी, पाटली, और नगीना प्रकार का होता है।
- यदि लहरिया की धारियां एक - दूसरे को काटती है तो **उसे मोठड़ा** कहते है।
- बड़ी - बड़ी चौकोर बूंदो से युक्त अलंकरण **धनक** कहलाती है।
- बूँदों की आकृति गोलाकार हो, चुनरी कहलाती है। चुनरी सुआ, बेल, त्रिबूंदी, सग पीला, मोठड़ा, डाबा, लाडू, पतंगा, चौखाना तथा धनक आदि प्रकार की होती है।
- शेखावाटी- यहाँ बूंदों के माध्यम से बेल - बूटे, पशु - पक्षियों के अलंकरण भी बनाते है । इसका सीकर प्रमुख केन्द्र है।
- पाटोदा का लूगड़ा- झुंझुनूं जिले के मुकुन्दगढ़ और लक्ष्मणगढ़ का पाटोदा का लूगड़ा प्रसिद्ध है। यह पीले पोमचे का का ही एक प्रकार है।
- बाड़मेर और जैसलमेर मे घाघरें की फड़दें रंगी जाती है।
- बारां, कोटा एवं बूंदी अपनी बारीक बंधेज के लिए प्रसिद्ध रहे है।
- बूंदी का शिकारगाह अलंकरण (पेटर्न) प्रसिद्ध था। सवाई माधोपुर की बंधेज की पहचान मोर और इमली का अलंकरण है ।

➢ रंगाई - छपाई

- कपड़े पर रंग चढ़ाना व विभिन्न आकृतियों तथा अलंकरणों का प्रयोग करना रंगाई - छपाई कहलाता है।
- रंगाई, छपाई का काम नीलगर, छिपें व रंगरेजों द्वारा किया जाता है।
- कपड़े की रंगाई की कला जीनगीरी कला कहलाती है ।

➢ आजम प्रिंट

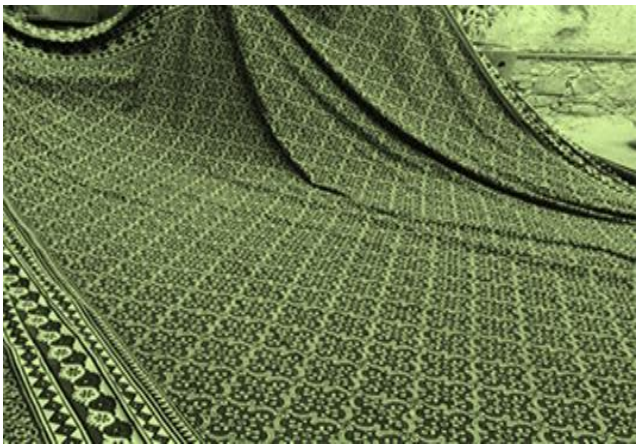

- यह प्रिंट अकोला, चित्तौड़गढ़ की प्रसिद्ध है।
- इसमें हरे, लाल व काले रंग का प्रयोग किया जाता है।

➢ जाजम प्रिंट

- यह प्रिंट अकोला चित्तौड़गढ़ की प्रसिद्ध है।
- इस प्रिंट में लाल व हरे रंग का प्रयोग करते हुए सूती मोटे कपड़े की रेजा द्वारा बुनाई की जाती है।

➢ ***दाबू प्रिंट***

- *यह अकोला, चित्तौड़गढ़ की प्रसिद्ध है।*
- *इस प्रिंट में जिस स्थान पर रंग नहीं चढाना हो, उस स्थान को लेई या लुगदी से दबा देते हैं।*
- *दाबू प्रिंट में लाल व हरा रंग प्रयोग किया जाता है।*

मोम का दाबू - सवाईमाधोपुर
मिट्टी का दाबू - बालोतरा
मिट्टी व गोंद का दाबू - अकोला (चित्तौड़गढ़)
गेहू के बीधण का दाबू - सांगानेर व बगरु

➢ ***अजरक प्रिंट***

- *यह कला बालोतरा की प्रसिद्ध है।*
- *इस प्रिंट में दोनों तरफ छपाई होती है तथा लाल व नीले रंगों का प्रयोग किया जाता है।*
- *अजरक प्रिंट में ज्यामितिक आकृतियों की अधिकता होती है।*
- *अजरक प्रिंट के लिए खत्री जाति प्रसिद्ध है।*

अजरख प्रिंट का संबंध है[RAS -2007]
(a) बाड़मेर *(b) पाली*
(c) बगरु ***(d) बालोतरा***

➢ ***मलीर प्रिंट***

- *यह बालोतरा का प्रसिद्ध है।*
- *इस कला में कत्थई, काला रंग का प्रयोग किया जाता है।*
- *मलीर प्रिंट में टिन सेल छपाई पद्धति का प्रयोग किया जाता है।*

➢ ***सांगानेरी प्रिंट***

- *यह प्रिंट जयपुर की प्रसिद्ध है।*
- *इसमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।*
- *इस प्रिंट में काले व लाल रंग का प्रयोग होता है।*
- *इसका सर्वाधिक विकास सवाई जयसिंह के समय हुआ।*
- *इस कला को मुन्ना लाल ने प्रसिद्ध किया था ।*
- *इस कला में नामदेवी छिप्पे मलमल पर कढाई करते हैं।*
- *सागानेरी प्रिंट में दाख की बेल व चाँबून्दी का प्रिंट अधिक किया जाता है।*
- *सांगानेरी छपाई लट्ठा या मलमल पर की जाती है।*

राजस्थान का कौनसा शहर बेल - बूटों की छपाई की पारंपरिक कला के लिए जाना जाता है ?
[RAS- 2003]
(a) जयपुर *(b) बगरु*
(c) सांगानेर *(d) बाड़मेर*

➢ ***बगरु प्रिंट***

- *यह कला बेल बूटे की छपाई के लिए प्रसिद्ध है।*
- *इस कला में लाल व काला रंग प्रयुक्त होता है।*
- *बगरु प्रिंट में ठप्पा प्रिंट होती है।*
- *रामकिशोर छीपा को 2009 में बगरु प्रिंट के लिए पद्म श्री का अवार्ड मिला ।*
- *बगरू (जयपुर) की छपाई काफी लोकप्रिय है। इसमें रासायनिक रंगों का प्रयोग नहीं होता है।*

अध्याय - 3

प्रदर्शन कला एवं ललित कला तथा उनकी विशेषताएं

- **शास्त्रीय संगीत**
- **शास्त्रीय नृत्य**
- **लोक संगीत एवं वाद्ययन्त्र**
- **लोक नृत्य एवं नाट्य**

- संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं ।
- संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है-

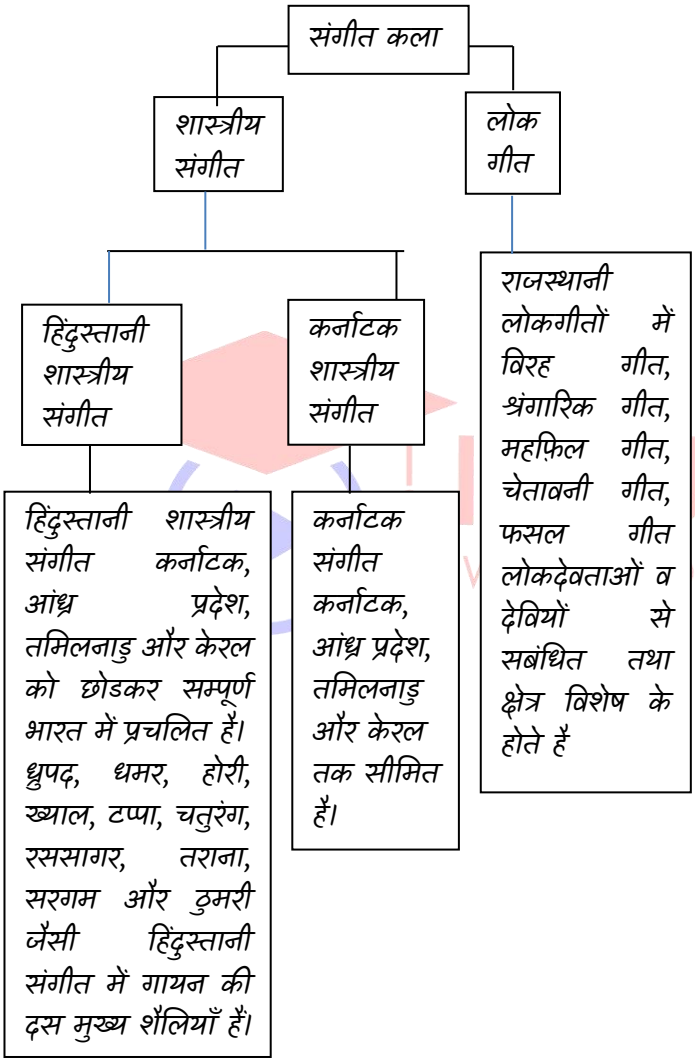

शास्त्रीय संगीत

- यह एक विशिष्ट गायन, वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है ।
- इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है, उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को' घराना ' कहा जाता है ।

- **राजस्थान में गायन, वादन व नृत्य के प्रमुख घराने**

राजस्थान में गायन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श (टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबारी)	यह जयपुर घराने की उपशाखा है। (प्रसिद्ध पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली इसी घराने के सदस्य है)
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
रंगीला घराना	रमजान खां 'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्य थे।

राजस्थान में वादन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
बीनकार घराना (जयपुर)	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
सेनिया घराना (जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारवादियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

राजस्थान में नृत्य के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13वीं सदी में माना जाता है।

- ***जीणमाता का गीत*** - यह गीत राजस्थान के समस्त गीतों में सबसे लम्बा लोक गीत है । इस गीत में भाई-बहन के प्रेम, पहाड़ों की तपस्या, मन्नतों का पूरा होना और आक्रमणकारियों से क्षेत्र की रक्षा का वर्णन किया जाता है।
- ***जकडियां*** - यह पीर ओलियों की प्रशंसा में गाया जाने वाला धार्मिक गीत है । राजस्थानी मुस्लिम समाज में इन गीतों का प्रचलन सर्वाधिक है ।
- ***जच्चा*** - यह गीत पुत्र जन्म के अवसर पर गाया जाता है, इसका अन्य नाम होलर है ।'
- ***जीरो*** - इस गीत में पत्नी अपने पति को जीरे की खेती न करने का अनुरोध करती है ।
- ***चरचरी*** - ताल और नृत्य के साथ उत्सव में गाई जाने वाली रचना **'चरचरी'** कहलाती है ।
- ***चाक गीत*** - विवाह के समय स्त्रियों द्वारा कुम्हार के घर जाकर घड़ा पूजने के समय गाया जाता है ।
- ***चिरमी*** - यह गीत चिरमी पौधे को सम्बोधित करके नववधु द्वारा भाई व पिता की प्रतीक्षा में गाया जाता है ।
- ***हींडा*** - यह गीत सहरिया जनजाति में दीपावली के अवसर पर गाया जाता है ।
- ***लहंगी*** - यह गीत जनजाति के द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाता है ।
- ***आल्हा*** - यह गीत सहरिया जनजाति के द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाता है ।
- ***चौबाली*** - राजस्थानी लोकगीतों का संस्मरण चौबाली कहलाता है ।
- ***रामदेवजी के गीत*** - लोकदेवताओं में सबसे लम्बे गीत ***राम देवजी*** के गीत हैं ।

➢ ***संगीत विद्या में पारंगत जनजातियाँ :-***

राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ जो संगीत विद्या में पारंगत हैं-

1. ***मांगणियार*** :- जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में मांगणियार लोक गायन शैली विकसित की ।

   प्रमुख कलाकार

   साकर खाँ - कमायचा वादक

   सद्दीक खाँ - खड़ताल का जादूगर

2. ***लंगा*** :- जैसलमेर, बाड़मेर क्षेत्र में लंगा लोक गायन शैली विकसित की ।

   प्रमुख वाद्य यंत्र- कमायचा, सीरंगी

   मुख्य गीत - नीम्बूड़ा

3. ***भोपा*** :- देवताओं के गीत गाने वाली जनजाति ।
4. ***कालबेलिया*** :- साँपों के नृत्य का प्रदर्शन करना ।
   मुख्य वाद्य यंत्र - पुंगी, खंजर, बीन, डफ
5. ***गरासिया*** :- मांदल वाद्य यंत्र बजाने में पारंगत ।

अभ्यास प्रश्न

1. विख्यात गजल गायक जगजीत सिंह का पैतृक निवास कौनसा था?

(a) श्रीगंगानगर (b) बीकानेर
(c) जयपुर (d) डूगरपुर **(a)**

2. लोक गीत किसी संस्कृति के मुँह बोले चित्र हैं। यह किसका कथन है?

(a) विश्वमोहन (b) देवेन्द्र सत्यार्थी
(c) कोमल कोठारी (d) आनन्द कुमार स्वामी **(b)**

3. मूमल क्या है

(a) लोक गीत (b) राज्य गीत
(c) भक्ति गीत (d) हरजस गीत **(a)**

4. 'सारंग ' संगीत किस समय गाया जाता है?

(a) सुबह (b) दोपहर काल
(c) साय (d) रात्र में **(b)**

5. राजस्थान का एक लोकगीत जिसमें .....को विरहणियों का पक्षी कहा गया है

(a) पीपली (b) लावणी
(c) पपैया (d) कुरजां गीत **(d)**

6. निम्न में से कौनसी माण्ड गायिका बीकानेर से सम्बंधित नहीं हैं?

(a) गवरी देवी
(b) हाजन अल्लाह जिलाई बाई
(c) बन्नो बेगम
(d) इनमें से कोई नहीं **(c)**

7. 'म्हारी बरसाले री मूमल , हालैनी ऐ आलीजे रे देख ' नामक लोकगीत किस क्षेत्र का है ?

(a) जोधपुर (b) बीकानेर
(c) जैसलमेर (d) सिरोही **(c)**

8. सूबटिया लोकगीत का सम्बन्ध किससे है?

(a) गरासिया स्त्री से (b) सती स्त्री से
(c) वीरांगना स्त्री से (d) भील स्त्री से **(d)**

9. "लांगुरिया गीत" का सम्बन्ध है ?

(a) शिला देवी (b) करणी माता
(c) राणी सती (d) कैलादेवी **(d)**

- इनके प्रमुख शिष्य होरोजी, हंसोजी, रूस्तमजी थे।
- इन्होनें योग पर बल दिया था।
- सिकन्दर लोधी इनसे प्रभावित थे, जिन्होंने कतियासर में इनकों जमीन प्रदान की थी।
- जसनाथ जी के अनुयायी जो इस संसार से विरक्त हो गये हैं, उन्हें परमहंस कहा जाता हैं।
- इन्होने अपने अनुयायीयों को 36 नियमों का पालन करने की आज्ञा दी हैं।
- जाट इनके अधिक अनुयायी थे। जो गले में काली ऊन का धागा बांधते हैं।
- जमीन में समाधि लेना, रात्री जागरण, अग्नि पर नृत्य करना आदि कार्य करते हैं।
- कतरियासर में आश्विन शुक्ल सप्तमी को मेला लगता हैं।
- इस सम्प्रदाय की पांच प्रमुख पीठे निम्न प्रकार हैं –
  1. बमलू - बीकानेर 2. लिखमादेसर-बीकानेर 3. पूनरासर- बीकानेर 4. मालासर – बीकानेर 5. पांचला – नागौर

➢ **संत जांम्भो जी (विश्नोई सम्प्रदाय)**

- इनका जन्म नागौर के पीपासर ग्राम में भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को हुआ था।
- पिता का नाम - लोहट तथा माता का नाम - हंसा देवी, ये पंवार वंशीय राजपूत थे।
- इनका मूल नाम धनराज था।
- इन्हें पर्यावरण वैज्ञानिक, गहला व गूंगा के नाम से भी जाना जाता था।
- जांम्भोजी ने जम्भ संहिता, जम्भ सागर, शब्दवाणी, विश्नोई धर्म प्रकाश नामक ग्रंथ लिखे।
- जांम्भोजी के उपदेश स्थल को साथरी कहा गया।
- इन्होंने आत्मा को अमर तथा ईश्वर के समान सर्वव्यापक माना हैं एवं मोक्ष के लिए गुरू होना अनिवार्य माना हैं।
- विश्नोई पंथ की दीक्षा लेने वाले को गुरू मंत्र पिलाया जाता हैं, जिसे महल कहा जाता हैं।
- जाम्भोजी ने इस संसार को गोवलवास (अस्थायी निवास) बताया हैं।
- माता पिता की मृत्यु के बाद बीकानेर के सभास्थल (समरास्थल) चले गये वहाँ हरि सत्संग करते थे।
- यहाँ धोकधोरा नामक स्थान पर कार्तिक कृष्ण अष्टमी सन् 1485 ई. को विश्नोई सम्प्रदाय की स्थापना की।
- जीव हत्या, वृक्ष काटना, छुआछूत- ऊंच-नीच के निवारा के लिए लोगों को 29 नियमों के पालन करने की सलाह दी।
- ये नियम इन्होंने हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म से लिए थे।
- इन नियमों का पालन करने वालें विश्नोई कहलायें। विश्नोई सम्प्रदाय इनका पालन करते थे।
- माघ कृष्ण नवमी को तालवा - मुकाम नामक स्थान पर शरीर छोड़ दिया।
- गुरू जम्भोजी के सम्मान में बीकानेर के नरेश ने अपने झण्ड़े में खेजड़े के वृक्ष को 'माटो' के रूप में रखा था।
- जम्भसागर (जम्भोवाणी) **जांम्भोजी** का प्रमुख ग्रंथ हैं। इन्होंने विष्णु की भक्ति पर बल दिया व खुद को विष्णु कहा।

- **जाम्भोजी के आठ धाम –**

1. पीपासर (नागौर) - जन्म स्थल
2. मुकाम (बीकानेर) – बीकानेर जिले की नोखा तहसील में मुकाम नामक स्थान पर समाधि स्थल हैं, जहां आश्विन व फाल्गुन अमावस्या को मेला भरता हैं।
3. लालसर (बीकानेर) - निर्वाण प्राप्त हुआ
4. जाम्भा (जोधपुर) - विश्नोई समाज का पुष्कर कहलाता हैं, यहां जैसलमेर के जैतसिंह ने तालाब का निर्माण करवाया, जहां चैत्र अमावस्या तथा भाद्रपद पूर्णिमा को मेला भरता हैं।
5. जांगलू (बीकानेर) - भाद्रपद अमावस्या को व चैत्र अमावस्या को मेला भरता हैं।
6. रामड़ावास (जोधपुर) - जाम्भोजी ने उपदेश दिये थे।
7. लोदीपुर, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) - अपने भ्रमण के दौरान आये।
8. रोटू (नागौर) - आराध्य स्थल हैं।

- विश्नोई खेजड़ी की सरक्षार्थ अपने बलिदान के लिए जाने जाते हैं। करमा और गौरा ने जोधपुर के रैंवासड़ी गांव में बलिदान दिया तथा अभय सिंह के शासन काल में अमृता देवी ने बलिदान दिया

विश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु जम्भेश्वर से संबंधित मुख्य स्थान हैं ? (R.A.S. 2003)

(a) लूनी (b) नौंखा
(c) बालोतरा **(d) मुकाम**

➢ **रामस्नेही**

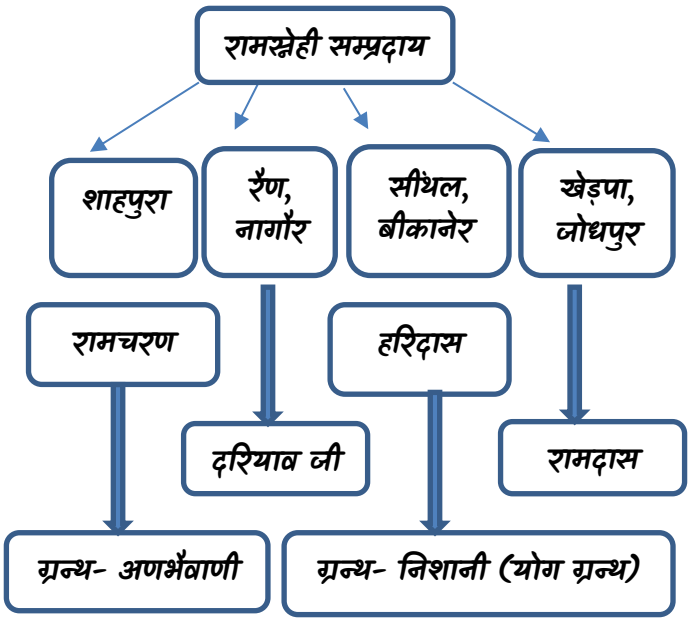

- इसके प्रवर्तक रामचरण दास जी थे ।
- इनके बचपन का नाम रामकिशन था ।
- जिसे इनके गुरू कृपाराम ने रामचरण कर दिया ।
- रामचरण जी का जन्म टोंक जिले के सोड़ा ग्राम में विजयवर्गीय परिवार में 1720ई. को हुआ था ।
- इनके पिता का नाम बखतराम, माता का नाम देऊजी था ।
- इनका स्वर्गवास 1798 शाहपुरा में हुआ था ।
- यहाँ पर रामस्नेही सम्प्रदाय की मुख्य पीठ हैं ।
- इनके पूजा स्थल रामद्वारा कहलाते हैं ।
- इनका मुख्य ग्रंथ अर्णभवाणी हैं ।
- इस मत में मूर्ति पूजा नहीं करते व गुलाबी वस्त पहनते हैं।
- फूलडोल मेला शाहपुरा (भीलवाड़ा) - होली के पश्चात दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र कृष्ण पंचमी तक लगता हैं।
- तीन अन्य स्थानों पर पीठ हैं।

➢ **<u>सिंहथल</u>**

- बीकानेर, प्रवर्तमक - हरिदास जी थे ।
- इनके गुरू जयमल दास थे ।
- इन्होंने निशानी नामक ग्रंथ लिखा, जिसमें प्राणायाम व योग साधना का वर्णन किया गया हैं।

➢ **<u>रैण, मेड़ता</u>**

- प्रर्वतक – दरियाव जी ।
- इनके गुरू प्रेमनाथ थे ।
- इनका जन्म पाली जिले के जैतारण ग्राम में हुआ।
- इन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता पर जोर दिया तथा राम शब्द के दो अर्थ बताये - रा-राम, म-मोहम्मद।

➢ **<u>खेड़ापा</u>**

- जोधपुर, प्रवर्तक रामदास जी ।
- इनके गुरू हरि रामदास जी थे ।
- इन्होंने मूल सम्प्रदाय के आदर्शों को ही आगे बढ़ाया ।

शाहपुरा में जिस संप्रदाय की पीठ स्थित हैं, वह हैं- (RAS 2009)

(a) दादू संप्रदाय (b) वल्लभ संप्रदाय
(c) निम्बार्क संप्रदाय **(d) रामस्नेही संप्रदाय**

➢ **<u>दादू सम्प्रदाय</u>**

- इसके प्रवर्तक दादू दयाल जी थे ।
- इन्हें राजस्थान का कबीर कहा जाता हैं ।
- इनका अभिवादन सत्यराम होता हैं ।
- दादू जी का जन्म सन् 1544 ई. में गुजरात के अहमदाबाद नगर में हुआ था ।
- दादुजी की रचनाएँ दादूदयाल री वाणी ढूंढाडी भाषा हैं ।
- सन्त बुद्धाराम/ बुड्डन जी / वृन्द्धानंद जी (ये संत कबीर के शिष्य थे) से दीक्षा ग्रहण की और 19 वर्ष की आयु में राजस्थान आये ।
- इन्होनें अपना प्रथम उपदेश 1568 में सांभर में दिया तथा यही पर ब्रह्म की उपासना पर जोर देते थे।
- दादू पंथी साधु विवाह नहीं करते थे ।
- सन् 1602 में नरैना (फुलेरा) आ गये और वही ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी 1605 ई. में महाप्रयाण किया ।
- 1585 ई. में फतेहपुर सीकरी की यात्रा के दौरान उन्होंने अकबर से भेंट की तथा उसे अपने विचारों से प्रभावित किया।
- इन्होनें बाह्य आडम्बरों को दूर करने के लिए **निपख नामक** आंदोलन चलाया।
- नरायणा (नरैणा) जयपुर में इनका अन्तिम समय व्यतित हुआ, जहां इनकी प्रधान गद्दी हैं।
- दादू पंथ के सत्संग स्थल "अलख दरीबा" कहलाते हैं ।
- कविता रूप में व्यक्त विचारों को दादू वाणी तथा दादू दयाल जी रा दूहा कहा जाता हैं ।
- मूर्ति पूजा का घोर विरोध किया तथा हिन्दू मुसलमान एकता पर ध्यान दिया था ।
- निर्गुण ब्रह्म की उपासना व शव को जंगलों में खुला छोड़ना, मोक्ष में विश्वास नही रखते थे ।
- दादू जी का मेला नरायणा में फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को भरता हैं ।

- ***दादू की पाँच प्रमुख शाखाऐं हो गई –***

1. खालसा (गरीबदास जी से संबंधित)
2. विरक्त (इसे निहंग भी कहा जाता हैं, जो चलते फिरते हुये गृहस्थियों को आदेश देते हैं)
3. उतरादे (ये राजस्थान छोड़कर उत्तर भारत चले गये)
4. खाकी (ये शरीर पर भस्म रमा कर रहते हैं)
5. नागा (ये नंगे रहते हैं, इसकी स्थापना सुंदरदास जी ने की थी)

- ***अलख दरीबा*** - दादू पंथ के सत्संग स्थलों को कहा जाता हैं ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/uwc5lp 1 web.- https://bit.ly/3X6MGue

FREE SAMPLE

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
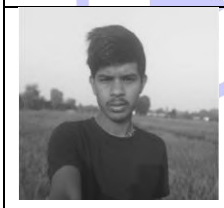	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
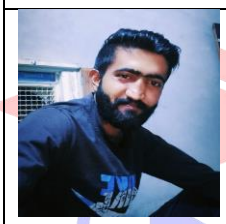	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/uwc5lp

Online order करें – https://bit.ly/3X6MGue

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE